



(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 57, अंक 1, अप्रैल, 2021
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये



दिवंगत राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी



भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी के साथ



भारत के पूर्व राष्ट्रपति नहन प्रतिभा पाटिल जी के साथ



भारत के पूर्व राष्ट्रपति भ्राता म्णब मुखर्जी जी के साथ



भारत के प्रधानमंत्री भ्राता नरेन्द्र मोदी जी के साथ



भारत के राष्ट्रीय अध्यक्ष भ्राता जगत प्रकाश नड्डा जी के साथ



भारत के पूर्व उप-राष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत जी के साथ



श्रीलंका के प्रधानमंत्री भ्राता रामिल विक्रमसिंघे जी के साथ



भारत के पूर्व उप-राष्ट्रपति भ्राता हामिद अंसारी जी के साथ



भ्राता लालकृष्ण आडवाणी जी के साथ



राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री बहन वसुन्धरा राजे सिंधिया जी के साथ



दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री बहन शीला दीक्षित जी के साथ



हि.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री भ्राता प्रेम सिंह धूमस जी के साथ

बापदादा की साक्षात् मूर्त,

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी का देहावसान



प्यारे बापदादा की साक्षात् मूर्त, राजयोगिनी मीठी दादी हृदयमोहिनी जी (दादी गुलज़ार जी) ने पूरे दैवी परिवार के दिलों पर राज्य किया। बापदादा का साकार माध्यम बन प्रभु मिलन करवाया। आपको दिव्य दृष्टि का वरदान प्राप्त था। इस वरदान के द्वारा अव्यक्त वतन के अनेक रहस्य स्पष्ट किये। सन् 1969 से 2016 तक परमात्मा के संदेशवाहक की भूमिका निभाई। ऐसी मीठी 93 वर्षीय दादी जी का हम सबके बीच से 11 मार्च, 2021 को 85वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती के महान पर्व पर गुरुवार सुबह 10.30 बजे देहावसान हो गया। एक साल पहले, राजयोगिनी दादी जानकी के अव्यक्त होने के बाद ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका नियुक्त की गई थीं।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी का स्वास्थ्य कुछ समय से ठीक नहीं चल रहा था और मुम्बई के सैफी हॉस्पिटल में कुछ समय से स्वास्थ्य लाभ चल रहा था। आपने सैफी हास्पिटल में अंतिम सांस ली। एयर एंबुलेंस से आपके पार्थिव शरीर को शांतिवन लाया गया जहां

देश-विदेश से आने वाले लोगों के अंतिम दर्शन के लिए रखा गया। हजारों की संख्या में मौजूद ब्र.कु. भाई-बहनों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए दादीजी की शिक्षाओं को जीवन में उतारने, उनके बताए कदमों पर चलने और उनके समान योग-साधना कर खुद को परिपक्व बनाने का संकल्प लिया। अंतिम संस्कार संस्थान के शांतिवन परिसर में 13 मार्च को किया गया। दादी जी के देवलोकगमन पर राष्ट्रपति से लेकर प्रधानमंत्री और राज्यों के मुख्यमंत्रियों तक ने शोक व्यक्त करते हुए भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी।

वर्ष 1928 में कराची में हुआ था जन्म

दादी हृदयमोहिनी के बचपन का नाम शोभा था। आपका जन्म वर्ष 1928 में कराची में हुआ था। आप जब 8 वर्ष की थी तब संस्था के साकार संस्थापक ब्रह्मा बाबा द्वारा खोले गए ओम निवास बोर्डिंग स्कूल में आपने दाखिला लिया। यहां आपने चौथी कक्षा तक पढ़ाई की। स्कूल में बाबा और मम्मा (संस्थान की प्रथम मुख्य

अमृत-सूची

● बापदादा की साक्षात् मूर्त राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी का देवलोकगमन	3	● ज्ञान एवं गुणों की साझेदारी	21
● प्रसिद्ध महानुभावों का दादी जी के प्रति श्रद्धांजलि संदेश	8	● योगाभ्यास के समय नींद का प्रकोप: इसमें बेपरवाही न हो	22
● रचें जीवन में धर्म का मेघधनुष	11	● अब नहीं तो कब नहीं	25
● मैं भारत हूँ (कविता)	14	● बाबा ने कहा, बच्चा मन-बुद्धि से समर्पित है	26
● रूहानी प्यार	15	● ओ प्यारी दादी गुलज़ार (कविता)	29
● नफरत	18	● सचित्र सेवा-समाचार	30
● आन्तरिक शक्तियों का संचय	19	● दयाभाव - अमीरी का मार्ग	32
● मानव का महान शत्रु क्रोध	20	● शुभाशीष	34



प्रशासिका) के स्नेह, प्यार और दुलार ने आपको इतना प्रभावित किया कि छोटी सी उम्र में ही अपना जीवन उनके समान बनाने का निश्चय किया। आपकी लौकिक माताजी भी भक्तिभाव से परिपूर्ण थीं।

तीक्ष्ण बुद्धि होने से आप जब भी ध्यान में बैठतीं तो शुरुआत के समय से ही दिव्य अनुभूतियां होने लगीं। यहां तक कि आपको कई बार ध्यान के दौरान दिव्य आत्माओं के साक्षात्कार भी हुए, जिनका जिक्र आपने ध्यान के बाद ब्रह्मा बाबा और अपनी साथी बहनों से भी किया।

शांत, गंभीर और गहन व्यक्तित्व की प्रतिमूर्ति

दादी हृदयमोहिनी की सबसे बड़ी विशेषता थी उनका गंभीर व्यक्तित्व। बचपन में जहां अन्य बच्चे स्कूल में शरारतें करते और खेल-कूद में दिलचस्पी के साथ भाग लेते थे, वहीं आप गहन चिंतन की मुद्रा में हमेशा

रहतीं। मात्र 8-9 वर्ष की उम्र से आपको दिव्यलोक की अनुभूति होने लगी। आपकी बुद्धि की लाइन इतनी साफ और स्पष्ट थी कि जब आप खुद को आत्मा समझकर परमात्मा का ध्यान करतीं तो आपको यह आभास ही नहीं रहता था कि आप इस जमीन पर हैं।

सादगी, सरलता और सौम्यता की थीं मिसाल

दादी का पूरा जीवन सादगी, सरलता और सौम्यता की मिसाल रहा। बचपन से ही विशेष योग-साधना के चलते दादी का व्यक्तित्व इतना दिव्य हो गया था कि उनके संपर्क में आने वाले लोगों को उनकी तपस्या और साधना की अनुभूति होती थी। उनके चेहरे पर तेज का आभामंडल उनकी तपस्या की कहानी साफ बयां करता था।

1969 में ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद वनीं परमात्म दूत

संस्था के संस्थापक ब्रह्मा बाबा के 18 जनवरी, 1969 में अव्यक्त होने के बाद परमात्म आदेशानुसार दादी हृदयमोहिनी ने परमात्मा की संदेशवाहक और दूत बनकर लोगों के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और दिव्य प्रेरणा देने की भूमिका निभाई। दादीजी ने 2016 तक संस्थान के मुख्यालय माउंट आबू में हर वर्ष आने वाले लाखों भाई-बहनों के लिए परमात्मा का दिव्य संदेश देकर, उन्हें योग-तपस्या बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। एक बार चर्चा के दौरान दादीजी ने बताया था कि जब मैं मन की शक्ति



से वतन में जाती हूँ तो आत्मा तो शरीर में रहती है लेकिन मुझे इस शरीर का भान नहीं रहता है। उस दौरान मेरे द्वारा जो वचन उच्चारित होते हैं वे भी मुझे याद नहीं रहते हैं।

बाबा से दादी जी को हुए थे साक्षात्कार

एक साक्षात्कार के दौरान दादी ने बताया था कि जब वे नौ वर्ष की थीं और अपने मामा के यहां गईं थीं, तभी उनके घर ब्रह्मा बाबा का आना हुआ। यहां बाबा से उन्हें दिव्य साक्षात्कार हुआ था। बाबा हम बच्चों का इतना ख्याल रखते थे कि खुद अपने हाथों से दूध में काजू-बादाम डालकर खिलाते थे। बाबा का प्यार, स्नेह इतना मिला कि कभी भी लौकिक मां-बाप की याद नहीं आई।

14 साल तक हैदराबाद में रहकर की कठिन साधना

दादी हृदयमोहिनी ने 14 वर्ष तक बाबा के सानिध्य में रहकर कठिन योग-साधना की। इन वर्षों में खाने-पीने को छोड़कर दिन-रात योग-साधना में वे लगी रहती थीं। इसके साथ ही बाबा एक-एक सप्ताह का मौन कराते थे। तभी से दादी का स्वभाव बन गया था कि जितना काम हो

उतनी ही बात करती थीं। अंत समय वे मौन में रहीं।

नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय ने प्रदान की डिग्री

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनीजी को नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय, बारीपाड़ा ने 2017 में डी. लिट. (डॉक्टर ऑफ लिटरेचर) की उपाधि से विभूषित किया है। दादी को यह उपाधि उड़ीसा में प्रभु के संदेशवाहक के रूप में लोगों में आध्यात्मिकता का प्रचार-प्रसार करने और समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान पर प्रदान की गई। संस्था की 80वीं वर्षगांठ पर मुख्यालय माउण्ट आबू, आबू रोड के शांतिवन में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन एवं सांस्कृतिक महोत्सव में 28 मार्च, 2017 को नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्रा ने उपाधि प्रदान की। उन्होंने दादी के कार्यों की सराहना करते हुए इसे गौरव का विषय बताया था। कुलपति मिश्रा ने कहा कि मैं आज यह डिग्री दादी को देते हुए बहुत ही गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। संस्था विश्वशांति, प्रेम, भाईचारा और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में जो कार्य कर रही है वह अनुपम उदाहरण है।



दादी हृदयमोहिनी, दादी प्रकाशमणि, दीदी मनमोहिनी एवं अन्य दादीयों के साथ

दादी जानकी के अव्यक्त होने के बाद बनीं थीं मुख्य प्रशासिका

पिछले साल 27 मार्च, 2020 में संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका 104 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी जी के अव्यक्त होने के बाद आपको संस्थान की मुख्य प्रशासिका नियुक्त किया गया था। अस्वस्थ होने के बाद भी आपको दिन-रात लोगों का कल्याण करने की भावना लगी रहती थी। दादीजी मुंबई से ही संस्थान की गतिविधियों का सारा समाचार लेतीं और समय प्रति समय निर्देशन देतीं थीं।



दादी हृदयमोहिनी जी, दादी जानकी जी के साथ

दादीजी को कभी हलचल में व उदास नहीं देखा

दादी हृदयमोहिनीजी की निजी सचिव ब्रह्माकुमारी नीलू बहन ने बताया कि मैं खुद को भाग्यशाली समझती हूँ कि मुझे बचपन से ही दादीजी के अंग-संग रहने का सौभाग्य मिला। हॉस्पिटल में भर्ती होने के बाद भी कभी उन्हें मन से विचलित या परेशान होते नहीं देखा। बीमारी की स्थिति में भी उनका चेहना और मन सदा परमात्मा के ध्यान में लगा रहता था।

प्रातः काल से शुरू होता था ध्यान साधना का दौर

ब्रह्माकुमारी नीलू बहन ने बताया कि दादीजी हमेशा तीन बजे ब्रह्ममुहूर्त में उठ जाती थीं। उनकी दिनचर्या की शुरुआत साधना के साथ होती थी। यहां तक कि चलते-फिरते, खाते-पीते ईश्वर के ध्यान में मग्न रहतीं।

12 लाख भाई-बहनें और 46 हजार बहनों की थीं आदर्श

ब्रह्माकुमारीज से देश-विदेश में जुड़े 12 लाख भाई-बहनों और 46 हजार समर्पित ब्रह्माकुमारी बहनों की दादी आदर्श थीं। उनके द्वारा उच्चारित बोल, लाखों लोगों के जीवन को बदलने और आगे बढ़ाने के लिए वरदानी बोल होते थे। अस्वस्थ होने के बाद भी दादीजी अंतिम समय तक लोगों को प्रेरित करतीं रहीं।

दादी के चेहरे पर कभी दर्द की फीलिंग नहीं देखी

मुंबई के सैफी हॉस्पिटल में दादीजी का इलाज करने वाले डॉक्टर्स डॉ. दीपेश अग्रवाल, डॉ. प्रसन्ना, डॉ. आकाश शुक्ला, डॉ. निपुन गंगवाला, डॉ. मनोज चावला, डॉ. जिगर देसाई ने अपने-अपने अनुभव बताते हुए कहा कि हम खुद को भाग्यशाली समझते हैं कि दादीजी जैसी दिव्य और महान आत्मा का इलाज करने का मौका मिला। हमारे जीवन का यह पहला अनुभव रहा है कि किसी मरीज के इलाज के दौरान दिव्य अनुभूति



दादी हृदयमोहिनी जी, सभी वरिष्ठ दादीयों के साथ

हुई। जैसे ही दादीजी के रूम में जाते थे तो मन को शक्तिशाली फीलिंग होती थी। बीमारी के बाद भी दादीजी के चेहरे पर कभी दर्द, दुख या उदासी की फीलिंग नहीं देखी। दादीजी के साथ के अनुभव को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है।

श्रद्धांजलि देने वाले नेताओं का लगा तांता

दादी के देहावसान की खबर सुनते ही देश के राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ कोविंद, उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू, पीएम नरेन्द्र मोदी, लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला, गृहमंत्री अमित शाह, बीजेपी चीफ जेपी नड्डा, कांग्रेस नेता राहुल गांधी, राजस्थान के मुख्य मंत्री अशोक गहलौत, बीजेपी के प्रदेश चीफ सतीष पुनिया, राज्यसभा सांसद नीरज डांगी, सिरोही विधायक संयम लोढ़ा, सांसद श्रमिष्ठा मुखर्जी, झारखंड की राज्यपाल द्रोपदी मूर्मू, छत्तीसगढ़ के राज्यपाल अनुसुइया उईके, मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, नेता प्रतिपक्ष समेत कई प्रदेशों के मंत्री, विधायक, इंडिया टीवी के प्रधान सम्पादक रजत शर्मा, मंत्री, नेता और अभिनेताओं ने टवीट कर अपनी संवेदना व्यक्त की है।

दादी हृदयमोहिनी के जीवन की मुख्य शिक्षाएं

• परमात्मा एक हैं। हम सब उनकी संतान हैं, आपस में भाई-बहन हैं। जब इस भाव में रहेंगे तो संसार की ज्यादातर समस्याएं अपनेआप खत्म हो जाएंगी।

- जब मैं कोई कार्य कर सकती हूँ तो आप भी कर सकते हैं। बहनों से कहती थीं कि आप तो दुर्गास्वरूपा, शक्तिस्वरूपा हो। आपको इस दुनिया में नई राह दिखानी है।
- दादी कहती थीं कि परेशान होने के पांच शब्द हैं- पहला है क्यों... क्यों कहा और व्यर्थ संकल्पों की क्यों चालू हो जाती है, इसने ये कहा, उसने ये कहा और मन में व्यर्थ संकल्प चालू हो जाते हैं। जो बीत चुका वह हमारे हाथ में नहीं है। क्यों, क्या, कौन, कब और कैसे... ये पांच शब्द हमें परेशान करते हैं। खुशी के जाने के कारण ये पांच शब्द ही हैं।
- सुखदाता शिवबाबा हैं, उन्हें याद करने से हमारे जीवन में सुख आता है। जब हम लाइट का स्वीच ऑन करते हैं तो सेकंड में अंधकार दूर होकर प्रकाश आता है। ऐसे ही जब हम अपने मन के तार शिवबाबा से जोड़ते हैं तो हमारे मन का अंधकार दूर हो जाता है और मन प्रकाशित अर्थात् शक्तिशाली बन जाता है।
- हर कार्य में सफल होने का एक ही मूलमंत्र है दृढ़ता। यदि जीवन में दृढ़ता है तो सफलता निश्चित है, हुई पड़ी है। इसलिए प्लानिंग करके उसे पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्प करें। मेरे जीवन का अनुभव है कि जो भी कार्य किया है वह दृढ़ता के साथ किया है और सदा सफलता भी मिली है। दृढ़ता रूपी चाबी को हमेशा संभालकर रखें। ■■■■



दादी हृदयमोहिनी जी, सभी वरिष्ठ दादीयों के साथ

प्रसिद्ध महानुभावों का दादी जी के प्रति श्रद्धांजलि संदेश

मुझे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रमुख राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी के स्वर्गवास के बारे में जानकर अत्यन्त दुःख हुआ।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी ने लोगों के दैनिक जीवन से जुड़े विभिन्न विषयों - अध्यात्म, दर्शन और राजयोग जैसे क्षेत्रों में सराहनीय योगदान दिया। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानवता और जनसेवा के लिए अर्पित कर दिया। वे राजयोग के प्राचीन उपदेशों से प्रेरित जीवन मूल्यों के पालन और प्रसार के लिए सदा प्रतिबद्ध रहीं। उनका जीवन हम सभी को समाज और देश की निःस्वार्थ सेवा करने के लिए प्रेरित करता रहेगा।

मैं आपको एवं ब्रह्माकुमारी के सभी सदस्यों एवं उनके अनुयायियों के प्रति अपनी शोक संवेदना व्यक्त करता हूँ। ईश्वर आप सबको इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

**-भ्राता रामनाथ कोविंद,
महामहिम राष्ट्रपति, भारत सरकार**

मानव दुखों को दूर करने और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए किए गए अनेक प्रयासों के लिए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी को हमेशा याद किया जाएगा। ब्रह्माकुमारी परिवार के सकारात्मक संदेश को सारे विश्व में फैलाने के लिए उन्होंने अहम भूमिका निभाई है। उनके जाने से बहुत दुख हुआ है।

**-भ्राता नरेंद्र मोदी,
प्रधानमंत्री, भारत सरकार**

ब्रह्माकुमारीज प्रमुख राजयोगिनी दादी हृदय मोहिनी जी के देहांत का समाचार जानकर दुखी हूँ। उन्हें सब स्नेह से दादी गुलजार के नाम से भी जानते थे। आपने अपना संपूर्ण जीवन समाज सेवा, लोगों के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा उन्हें राजयोग की शिक्षा देने में समर्पित कर दिया।

**-भ्राता वेंकैया नायडू,
महामहिम उपराष्ट्रपति, भारत सरकार**

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी के देह त्याग की खबर सुनकर बहुत दुख हुआ। मानव कल्याण के लिए उनका संकल्प और समर्पण हमेशा ही हमारा मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। उन्हें बेहतर विश्व के निर्माण के लिए किये गए अग्रणी प्रयासों के लिए हमेशा याद किया जाएगा। मेरी गहन शोक संवेदनाएं।

**-भ्राता अमित शाह,
गृह मंत्री, भारत सरकार**

ब्रह्माकुमारी संस्थान की प्रमुख दादी गुलजार जी का पूरा जीवन समाज के लिए समर्पित रहा। उन्होंने दूसरों के जीवन में सकारात्मक अंतर लाने का प्रयास किया। अध्यात्म और महिला सशक्तिकरण में उनका योगदान उल्लेखनीय है। इस दुख की घड़ी में मेरी संवेदनाएं उनके अनुयायियों के साथ हैं।

**-भ्राता जगत प्रकाश नड्डा,
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी**

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी के लिए मेरी श्रद्धांजलि। उन्हें आध्यात्मिक जागृति हेतु प्रेरित करने में निभाई गई भूमिका के लिए हमेशा याद किया जाएगा और उनकी शिक्षाएं विश्वभर में ब्रह्माकुमारीज को मार्ग प्रदर्शन करती रहेंगी।

**-भ्राता राहुल गाँधी,
पूर्व अध्यक्ष, भारतीय कांग्रेस पार्टी**

ब्रह्माकुमारीज की प्रमुख दादी हृदयमोहिनी जी के देहावसान का समाचार दुःखद है। वह संवेदना, स्नेह, सरलता और करुणा की मिसाल थीं, जिन्हें मानव सेवा के कार्यों के लिए सदैव याद किया जाएगा। शोक की इस घड़ी में मेरी संवेदनाएं ब्रह्माकुमारीज परिवार एवं उनके अनुयायियों के साथ हैं।

**-भ्राता ओम बिरला,
लोकसभा अध्यक्ष, भारत सरकार**

ब्रह्माकुमारीज की प्रमुख राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी के निधन पर मेरी भावभीनी शोक संवेदनायें। उनका जीवन मानवता की सेवा के लिए समर्पित था और उन्होंने लोगों को आध्यात्मिक पथ पर चलने के लिए प्रेरित किया। उनके अनुयायियों के साथ मेरी संवेदनाएं। भगवान उन्हें शक्ति दे।

**-भ्राता अशोक गहलोत,
मुख्यमंत्री, राजस्थान**

ब्रह्माकुमारीज की प्रमुख, दिव्यता की मूर्ति राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी के निधन की खबर सुनकर मुझे बहुत दुःख और पीड़ा हुई। उन्हें समाज के अनगिनत लोगों को अपने महान विचारों के द्वारा आध्यात्मिक प्राप्ति, शिक्षा व समाज-सेवा के लिए और स्नेह, शांति व खुशी के प्रसार के लिए प्रेरित करने के लिए हमेशा याद किया जाएगा।

**-बहन द्रौपदी मुर्मू,
महामहिम राज्यपाल, झारखंड**

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासक दादी हृदयमोहिनी जी शरीर का त्याग कर ब्रह्मलीन हो गयी। वे 9 वर्ष की आयु में ब्रह्माकुमारी से जुड़ी थीं। परम श्रद्धेय दादी जी को कोटि-कोटि प्रणाम। विनम्र श्रद्धांजलि

**श्री धरमलाल कौशिक,
छत्तीसगढ़ विधान सभा में विपक्ष के नेता**

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासक दादी हृदयमोहिनी जी के निधन का दुःखद समाचार प्राप्त हुआ।

अध्यात्म से स्व का ज्ञान कराने वाली गुलजार दादी अपने नश्वर शरीर का त्याग कर संसार से विदा हो गईं लेकिन उनके विचार सदैव अमर रहेंगे

**डॉ. रमन सिंह,
छत्तीसगढ़ राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री**

दुःखद समाचार मिला है कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासक दादी हृदयमोहिनी जी (जिन्हें सब गुलजार दादी कहते थे) ने आज शरीर का त्याग कर दिया है। महाशिवरात्रि के दिन ही वह कैलाशवासिनी हो गयी हैं। उन्हें कोटि-कोटि प्रणाम एवं विनम्र श्रद्धांजलि

**श्री भूपेश बघेल,
छत्तीसगढ़ राज्य के मुख्यमंत्री**

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासक दादी हृदयमोहिनी जी ने आज शरीर का त्याग कर दिया है। परम श्रद्धेय दादी जी को कोटि-कोटि प्रणाम। विनम्र श्रद्धांजलि

**सुश्री अनुसुईया उइके,
छत्तीसगढ़ की राज्यपाल**

ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासक दादी हृदयमोहिनी जी के निधन का दुःखद समाचार मिला। महाशिवरात्रि के दिन ही वह कैलाशवासिनी हो गयी है। उन्होंने जीवन पर्यंत मानवता की सेवा को ईश्वर का कार्य माना। उनके सभी अनुयायियों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूँ।

**श्री अर्जुन मुंडा,
जनजातीय मामलों के मंत्री, भारत सरकार**

परम पूज्य दादी हृदय मोहिनी जी के देवलोक गमन के समाचार ने मेरे मन को अत्यन्त विचलित किया है। यह हम सभी के लिए अपूरणीय क्षति है। दादी हृदयमोहिनी जी शान्त स्वभाव एवं परोपकारी व्यक्तित्व की धनी थी। दादी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन आध्यात्मिक तथा सामाजिक सेवा में अर्पण किया। इन्होंने विश्व के कई देशों में आध्यात्मिकता का सन्देश दिया। दादी जी की दिव्यता एवं दूरदर्शिता से अनेक लोगों को शान्तिपूर्ण एवं आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा मिली। उनके व्यक्तित्व व कृतित्व से भावी पीढ़ियां सदैव प्रेरणा लेती रहेंगी।

मैं हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे स्वर्गीय आत्मा को शान्ति व शोक संतृप्त परिजनों को इस अपार वेदना को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

**अर्जुन राम मेघवाल
केन्द्रिय राज्यमंत्री**

महान व्यक्तित्व वाली महान आत्मा दादी हृदयमोहिनी जी के देहावसान का समाचार दुःखद है। मैं अपने एवं समस्त सिक्किम निवासियों की ओर से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। ईश्वर आप सबको इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

**प्रेम सिंह तमांग
मुख्यमंत्री, सिक्किम**

शुरू से ही दादी हृदयमोहिनी के साथ सखी की तरह रही। दादी का बचपन से ही शांत और गंभीर स्वभाव था। उनकी बुद्धि की लाइन इतनी क्लीयर थी कि कुछ ही सेकंड में वह ध्यानमग्न हो जाती थीं। उनका जीवन दिव्यता, पवित्रता और योग-साधना के प्रति अद्भुत लगन का मिसाल था।

**- दादी रतनमोहिनी,
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज**

हम सभी को परमात्मा पिता से मंगल मिलन कराने वालीं, परमात्म की संदेशवाहक दादी व्यक्त रूप से जरूर हम सबके बीच नहीं रहीं लेकिन उनके द्वारा दी गई अव्यक्त शिक्षाएं सदा भाई-बहनों का मार्गदर्शन करती रहेंगी।

**- बी.के. निर्वैर,
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज**

दादीजी का प्यार, स्नेह, दुलार और वात्सल्य बचपन से ही मिला। दादीजी का एक-एक कर्म आदर्श कर्म होता था। उनके साथ रहने पर ऐसी अनुभूति होती थी कि जैसे कोई दिव्य फरिश्ता के साथ हैं। उन्होंने योग-तपस्या से खुद को इतना शक्तिशाली बना लिया था कि उनके संपर्क में आने वाले हर एक भाई-बहन को अनुभूति होती थी।

**- बी.के. जयंती,
यूरोपीय देशों में ब्रह्माकुमारीज की निदेशिका**

इसके साथ-साथ दूसरे अनेक प्रसिद्ध महानुभावों ने भी दादी जी के प्रति अपने श्रद्धांजलि संदेश भेजे हैं, जिनमें से कुछेक के नाम हैं-

राजस्थान के केबिनेट मंत्री भ्राता बीडी कल्ला, इंडिया टीवी के मुख्य संपादक भ्राता रजत शर्मा, आंध्रप्रदेश के राज्यपाल भ्राता विश्वभूषण हरिचंदन, केरल के राज्यपाल भ्राता आरिफ मोहम्मद खान, राजस्थान के राज्यमंत्री डॉ. भ्राता सुभाष गर्ग, राजस्थान के राज्यमंत्री भ्राता भजनलाल जाटव, तेलुगू देशम पार्टी के अध्यक्ष भ्राता एन. चंद्रबाबू नायडू, नई दिल्ली आईआईएमसी के महानिदेशक प्रोफेसर संजय द्विवेदी, राजस्थान भाजपा अध्यक्ष भ्राता सतीश पूनिया, राज्यसभा सांसद भ्राता नीरज डांगी, सिरोही विधायक भ्राता संयम लोढ़ा, अभिनेता भ्राता सिद्धार्थ शुक्ला तथा अन्य।

■■■

रचें जीवन में धर्म का मेघधनुष

■■■ ब्रह्माकुमारी गीता बहन, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, शांतिवन

मानव जीवन में दो बातें महत्वपूर्ण हैं, एक कर्म और दूसरा धर्म। कर्म के बिना भी जीवन नहीं चल सकता और धर्म के बिना भी नहीं चल सकता। हम चैतन्य आत्मा, मानव शरीरधारी हैं। चैतन्य माना ही क्रियाशील। जड़ पदार्थ अपने आप क्रियाशील नहीं हो सकते हैं। बाहर से बल देने पर वे गतिशील होते हैं। हम चैतन्य आत्मा सोचते हैं, समझकर निर्णय करते हैं, कर्म करते हैं और फिर कर्म का फल भोगते हैं।

कर्मों को श्रेष्ठ बनाने के लिए जरूरी है धर्म की धारणा

सार रूप में हम कह सकते हैं कि आत्मा कर्ता है, शरीर कर्म करने का साधन है और यह सृष्टि कर्मक्षेत्र है। शरीर धारण करने के बाद चैतन्य शक्ति आत्मा एक क्षण भी कर्म किए बिना रह नहीं सकती है। हमें शरीर भी कर्मों के हिसाब-किताब अनुसार ही मिलता है और जन्म-मरण का चक्कर भी कर्म सिद्धांत के आधार पर ही चलता है। कर्म ही हमारी सर्व प्राप्तियों का आधार है। कर्म सिद्धांत का सर्व सामान्य ज्ञान हम सभी के पास है। हम जानते हैं, जैसा कर्म वैसा फल, जो करेगा वह भरेगा, जितना करेगा उतना पाएगा, अच्छे का अच्छा, बुरे का बुरा। अगर जीवन में दुख-अशांति के फल हम खा रहे हैं तो जरूर जाने-अनजाने गलत कर्मों के बीज हमारे द्वारा बोए जा रहे हैं, तब तो खा रहे हैं। इसलिए अगर हम सदाकाल के सुख-शांति के फल पाना चाहते हैं तो हमें अपने हर कर्म को सदा श्रेष्ठ बनाना होगा। इसके लिए धर्म की धारणा करनी जरूरी है, धर्म की शिक्षाओं को धारण किए बिना हम कर्मों को श्रेष्ठ नहीं बना सकते। कई समझते हैं कि कर्म ही पूजा है। परिवार, समाज, देश प्रति अपना कर्तव्य अदा करना ही धर्म है। कर्तव्य पालन बहुत

सुंदर गुण है लेकिन धर्म का ज्ञान तो कर्तव्य पालन जैसे अन्य कई मूल्यों का ज्ञान भी हमें देता है इसलिए धर्म का कर्म-व्यवहार में समन्वय करना बहुत जरूरी है। जब बीज को मिट्टी में बोते हैं तभी वह अंकुरित-प्रस्फुटित, पुष्पित-फलित होता है, इसी प्रकार, धर्म के ज्ञान को आचरण में लाते हैं तभी कर्म में सत्यता और श्रेष्ठता आती है और सदाकाल के सुख-शांति के फल मिल सकते हैं।

हम धर्म को आचरण में लाने के नाम पर उस धर्म द्वारा सिखाए गए क्रियाकांड या बाह्याचार को करने लगते हैं लेकिन धर्म के सविशेष ज्ञान, मूल्य या आचार-संहिता को जीवन में नहीं धारण करते हैं। परिणाम हम देख रहे हैं कि धर्मों के रस्मोरिवाज बढ़ रहे हैं और आचरण नाममात्र हो रहा है।

सतयुग और त्रेतायुग में आत्म-धर्म था

कुदरती बने-बनाए सृष्टि-खेल के संपूर्ण ज्ञाता परमपिता परमात्मा ही हमें धर्म का सत्य इतिहास बताते हैं। उस अनुसार, सृष्टि के आदिकाल सतयुग और त्रेतायुग में समस्त विश्व में आत्म-धर्म, रूहानी धर्म ही व्याप्त था। आत्म-धर्म अर्थात् आत्मा के मूलभूत गुणधर्म। प्रत्येक आत्मा के मूलभूत गुणधर्म हैं शांति, सुख, आनंद, प्रेम, पवित्रता। आत्मा सत्य है अर्थात् शुद्ध और अविनाशी है। यही कारण है कि हम सबको जीवन में सुख, शांति, आनंद चाहिए। इस आत्म-धर्म को ही सनातन धर्म के नाम से जाना गया क्योंकि आत्मा शाश्वत-सनातन है। जब सतयुग और त्रेतायुग में आत्म-धर्म था तो सर्व आत्माएँ पवित्र और सदगुण संपन्न थीं। पवित्रता और सदगुणों को मिलाकर ही दिव्यता कहा जाता है, तो वे देवी-देवताओं के रूप में प्रसिद्ध हुए और भारत भूमि को देवभूमि कहा गया। संसार चक्कर के इस स्वर्णिम काल

में आत्म-धर्म और प्रकृति विज्ञान, आत्म-धर्म और विश्वसत्ता, आत्म-धर्म और सत्कर्म का समन्वय था। इसलिए देवी-देवताओं को अपार धन-वैभव और सत्ता के प्रतीक के रूप में रत्नजड़ित ताज तथा आत्म-धर्म के प्रतीक के रूप में मस्तक के पीछे प्रकाश का ताज दिखाया जाता है। वहां धर्म का कर्म से अलग शास्त्र, ग्रंथ, मंदिर, मूर्ति या अन्य किसी साधन के रूप में कोई स्वरूप नहीं था। धर्म, कर्म में समाया होने के कारण सभी धर्मश्रेष्ठ एवं कर्मश्रेष्ठ थे। आत्म-धर्म वैश्विक है इसलिए सारे विश्व पर इसी सत्धर्म या आत्म-धर्म या देवता धर्म का शासन था, अन्य किसी धर्म का अस्तित्व नहीं था। विश्व ही स्वर्ग था, हर घर आश्रम-मंदिर था और हर व्यक्ति स्वयं चेतन देवता था। आत्म-धर्म से स्वयं पर शासन था और सभी मायाजीत, कर्मेन्द्रियजीत, कालजीत, प्रकृतिजीत और जगतजीत थे। यही कारण है कि हर धर्म सृष्टि के आदिकाल को गोल्डन एज, सतयुग, स्वर्ग, वैकुण्ठ, हेवन, पैराडाइज, जन्नत, सुखधाम, सचखंड आदि नामों से स्वीकारते हैं और वर्णन करते हैं। आत्म-धर्म ऐसा सार्वभौमिक सत्य धर्म है जो वहां कोई धर्मभेद, भाषाभेद, कुलभेद, मतभेद, मनभेद नहीं होता। समस्त विश्व पर देवी-देवताओं का अटल, अखंड, सुखपूर्ण, निर्विघ्न विश्व चक्रवर्ती राज्य था। सचमुच उस समय विश्व-परिवार और अमन-चैन का राज्य था।

देवी-देवताएँ थे तो वे कहां चले गए?

धीरे-धीरे प्रकृति और समय के संसर्ग में आने से हम परिवर्तन को प्राप्त होते हैं। परिवर्तनशील संसार के इस नियम के अनुसार, यहां कुछ भी स्थाई नहीं है। आत्मविस्मृत होने से हम शरीरभान में आए, इस कारण मूलभूत गुण-धर्म कमजोर पड़ने लगे। खुद को देह समझने लगे, तो स्त्री-पुरुष, काला-गोरा, सुंदर-साधारण यह दृष्टि बनने लगी। देह-अभिमान बनने से दैहिक आकर्षण, विषय-वासना उत्पन्न हुए, इंद्रियों के रस आकर्षित करने लगे। आखिरकार त्रेतायुग के अंत और द्वापरयुग के आदिकाल में हम आत्म-धर्म को खोकर, देहधर्म के

वशीभूत होने लगे। इसे ही देवताओं का वाम मार्ग में जाना कहा जाता है। वाम मार्ग माना उल्टा मार्ग, आध्यात्मिक पतन का मार्ग। दिव्यता खत्म होने लगी, दैहिकता बढ़ने लगी। देवी-देवताएँ ही साधारण मानव स्थिति में आने लगे, नहीं तो देवी-देवताएँ थे तो वे कहां चले गए? इसका कोई ऐतिहासिक या पौराणिक उल्लेख नहीं है। दैवी गुण संपन्न देवता, देवत्व से मानवत्व पर आने लगे। तभी कहा जाता है कि नर ऐसी करनी करे जो नारायण पद पाए। जीवन का स्वाभाविक आंतरिक आत्म-अनुशासन टूटने लगा, संसार की व्यवस्था बिगड़ने लगी।

धर्मस्थापकों का सृष्टि पर आगमन

लेकिन, आत्मा के असली गुणधर्म शांति, पवित्रता, आनंद आदि होने के कारण मनुष्य आत्माएं फिर से उन्हें प्राप्त करने के लिए आत्म-खोज और परमात्मा से मिलने के प्रयास करने लगीं। संसार के खेल को फिर से उत्थान के मार्ग पर ले जाने के लिए एक के बाद एक धर्मस्थापकों का सृष्टि पर आना शुरू हो गया। वे सब स्व-साधना की अनुभूतियों के आधार पर, उस समय की सामाजिक स्थिति की आवश्यकता के अनुसार शिक्षाएं देते गए और जरूरी मूल्यों का महत्व बताते गए।

जैन धर्म का प्रादुर्भाव – उसी काल में जैन धर्म का प्रादुर्भाव हुआ जिसमें महावीर स्वामी ने देहदमन द्वारा भी जितेंद्रिय बनने को महत्व दिया। आत्मशुद्धि के लिए जितेंद्रियता और अहिंसा के मूल्य उन्होंने सिखाए परंतु आंतरिक नियंत्रण के बिना केवल देहदमन से संयम और मर्यादा अपनाने का रास्ता लंबे समय तक और हर किसी के लिए संभव नहीं होता।

इस्लाम धर्म की स्थापना – दूर पश्चिम में इस्लाम धर्म की स्थापना हुई जिन्होंने शांति में बैठ एक परमात्मा को निष्ठा से याद करने का और धर्म के पुरुषार्थ को नियमित करने के लिए दृढ़ता का पालन करने का मार्गदर्शन दिया। परमात्मा के हुक्म को सख्ती से मानना और अन्य को जबरदस्ती मनवाने का प्रयास हुआ। इस प्रकार इस्लाम धर्म ने बिगड़ते संसार को बचाने के लिए

सख्ती के साथ कायदा पालन करने की बात कही। इस्लाम धर्म ने इन नियमों को बड़ी क्रूरता और अमानवीय तरीके से पालन करवाया। भावना शुभ थी इस्लाम धर्म की परंतु प्रयास अमानवीय थे। प्रीति भय से नहीं होती। सदाचरण तो स्व-जागृति और तीव्र इच्छा शक्ति से होता है। उसे थोपा नहीं जा सकता।

बौद्ध धर्म का आगमन – इसी प्रकार पूर्व में बौद्ध धर्म आया जिसने संसार को करुणा और मैत्री सिखाई परंतु मूल सनातन सत्यों पर प्रकाश नहीं डाला। धर्म के विभिन्न मतों के वितंडावाद में न जाकर इच्छाओं को और कर्मों को सम्यक् बनाने का मार्ग दिखाया लेकिन इस सुंदर भावना को व्यवहार में लाने के लिए आत्मशक्ति चाहिए। बिना आध्यात्मिक नींव के नैतिकता का भवन टिक नहीं सकता। आत्मा और परमात्मा का सत्य ज्ञान और मनोयोग ही मूल्यों में स्थिर रहने की शक्ति प्रदान करता है।

क्रिश्चियन धर्म की विचारधारा – दूर पश्चिम में फिर क्राइस्ट आए और क्रिश्चियन धर्म की नई विचारधारा देकर प्रेम और भाईचारे की बात सिखाई। भाईचारे की भावना से ही मानवता की सेवा का भाव आता है परंतु प्रचार-प्रसार और प्रभुत्व का स्वार्थभाव जब मिश्रित हो जाता है तब उस सेवा से विश्वकल्याण नहीं होता।

संन्यास मार्ग की स्थापना – भारत में फिर संसार को पवित्र बनाने हेतु शंकराचार्य जी द्वारा संन्यास मार्ग स्थापन हुआ जिसके द्वारा उन्होंने त्याग-तपस्या और वैराग्य के मूल्य सिखाए कि विषय-विकार ही मानव जीवन के सर्व दुखों के कारण हैं, उनका त्याग जरूरी है। परंतु, मन को नियंत्रित करने के लिए संसार की जिम्मेदारियां छोड़ देना, अन्य के प्रति नफरत पैदा करना, देहदमन द्वारा स्वविजयी बनना, यह उचित, सहज और सर्वसंभव नहीं है। अंतःस्फुरित वैराग्य भाव से स्वपरिवर्तन प्रभावी और स्थाई होता है। बेशक उनके पवित्र तपस्वी जीवन द्वारा नैतिक पतन के गर्त में जाते संसार को थमाने में बहुत बड़ी मदद मिली। समय के प्रभाव में संन्यस्त जीवन परिशुद्ध नहीं रहा है।

पहले हमारे देश का नाम भारत और धर्म का नाम आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। द्वापर युग के बाद विकार-वासना आने लगे तो देवी-देवता शब्द हटाकर यह केवल सनातन धर्म रह गया। बाद में विदेशियों के द्वारा इसे हिंदू धर्म कहा जाने लगा। इसी क्रम में सिंधु नदी के आसपास के स्थान को सिंधुस्तान के बजाय हिंदुस्तान नाम दिया गया और लोगों को हिंदू कहा जाने लगा।

सुंदर विशेषताओं का गुलदस्ता

इस प्रकार समय प्रति समय अनेक धर्मात्माओं, महात्माओं, आध्यात्मिक पुरुषों, योगियों, संतों ने आकर संसारी जीवन को सुव्यवस्थित बनाए रखने हेतु आवश्यक मूल्यों का मार्ग प्रशस्त किया। अगर इन धर्मों के सिखाए मूल्यों को हम सभी ने सीखा होता तो अपने जीवन में धर्मों का सुंदर मेघधनुष हम रच पाते और हमारा संसार मूल्यों के सामंजस्य का साकार स्वरूप बना रहता। लेकिन प्रत्येक धर्म से मिली हुई मूल्यनिष्ठ शिक्षाओं का सप्तरंगी मेघधनुष जीवन में रचने के बजाय हर एक ने अपने मनपसंद धर्म के रंग से अपना-अपना अलग चित्र बना दिया। विचार तो हर किसी के अलग-अलग होते हैं लेकिन धर्मात्माओं के सद्भावों को लेकर हम जीवन में रंगपूर्ति करते तो हम मानव समाज को मनोहर रंगोली का सा रूप दे सकते थे। विभिन्न सुरों को मिलाकर ही मनप्रिय, कर्णप्रिय संगीत हम बना सकते हैं बाकी वैर और वैमनस्य से तो हम खुद ही खुद के धर्म का खंडन करते और संसार रूपी खूबसूरत रचना को बदसूरत बना बैठते हैं। हर धर्म, संप्रदाय, जाति, समाज, व्यवसाय, भाषा, प्रांत से सुंदरता को और शुभ को हमने लिया होता तो संसार खुदा का बगीचा ना सही, सुंदर विशेषताओं का गुलदस्ता अवश्य बना पाते।

आज विभिन्न धर्मों के अलग-अलग रंगों के अलग-अलग रूप बन गए और वे आपस में लड़ रहे हैं, एक-दो को मार गिराने और खत्म करने पर तुले हैं, ऐसे में हर किसी को आत्म-धर्म की सुंदरता को अपनाना चाहिए। जब व्यक्ति शरीरभान से हटकर आत्मस्वरूप में स्थित होता है तो वह अपने आंतरिक मूलभूत गुणों का विकास कर स्वयं तो सुंदर बन ही जाता है लेकिन अन्य

को भी आत्म-दृष्टि से देखता है, व्यवहार करता है और उसे भी सुंदर बनने की प्रेरणा देता है। अगर हम विभिन्न मतों के वाद-विवाद और सैद्धांतिक लड़ाई-झगड़ों से विभाजित और कलुषित बने संसार को अखंड, निर्विघ्न, सुवासित बनाना चाहते हैं तो मूल प्राचीन सनातन आत्म-धर्म को अपनाना चाहिए तथा आत्मशुद्धि की साधना में लग जाना चाहिए। सांसारिक संघर्षों से थके इंसान सुख-शांति पाने के लिए धर्म की शरण में जाते हैं लेकिन धर्मों में ही लड़ाई-झगड़े, तू-मैं की स्थिति है, उसमें वे भी पिसते हैं तो कहाँ जाएं, क्या करें ?

अगर इन धर्मों के सिखाए मूल्यों को हम सभी ने सीखा होता तो अपने जीवन में धर्मों का सुंदर मेघधनुष हम रच पाते और हमारा संसार मूल्यों के सामंजस्य का साकार स्वरूप बना रहता। लेकिन प्रत्येक धर्म से मिली हुई मूल्यनिष्ठ शिक्षाओं का सप्तरंगी मेघधनुष जीवन में रचने के बजाय हर एक ने अपने मनपसंद धर्म के रंग से अपना-अपना अलग चित्र बना दिया।



ये ही धर्मग्लानि की स्थिति है जब स्वयं परमात्मा सृष्टि पर आकर सतधर्म या रूहानी-धर्म या आत्म-धर्म या आध्यात्मिकता की स्थापना करते हैं और विश्व के सभी धर्मों के धर्माधिकारियों और धर्मप्रिय आत्माओं को यही आदेश देते हैं, 'अब देहधर्म छोड़ो और मेरी बताई श्रेष्ठ मत पर चलो। परधर्म-देहधर्म भयावह है, आत्म-धर्म में ही कल्याण है। देह की दीवारों से ऊपर उठ जाओ और वैश्विक बंधुत्व द्वारा सुखमय संसार रचने के लिए आत्मा-आत्मा भाई-भाई की और एक निराकर ज्योतिर्बिंदु स्वरूप परमात्मा के विश्व परिवार की भावना जीवन में चरितार्थ करो।' ■■■

मैं भारत हूँ

■■■ ब्रह्माकुमार मदन मोहन, ओ.आर.सी., गुरुग्राम

मैं भारत हूँ, मेरे आँचल में बहती जीवन की सदा बयार।
अविनाशी खण्ड मैं इस जग में, सबकी जुड़ी है मुझसे तार।।

मैं विश्व गुरु, मैं सबका तीर्थ, दुनिया की मुझसे ही आस।
मेरी भूमि पर सदा खिला है सद्भाव, प्रेम और विश्वास।।
खुदा ने खुद तराशा मुझको, पवित्रता मेरा श्रंगार।
मैं भारत हूँ, मेरे आँचल में बहती जीवन की सदा बयार।।

सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलयुग का, मैं ही साक्षीद्रष्टा हूँ।
सत्य-अहिंसा-दिव्य गुणों की, मैं अतुलित इक निष्ठा हूँ।।
मुझसे ही पाया इस जग ने, विश्व बंधुत्व का उपहार।
मैं भारत हूँ, मेरे आँचल में बहती जीवन की सदा बयार।।

मुझमें ही जन्मे राम-कृष्ण, महावीर-गौतम और गाँधी।
सदियों सहे न जाने कितने, मैंने तूफ़ाँ और आँधी।।
बलिदानों की धरा हूँ मैं, हुए वार मुझ पर अपार।
मैं भारत हूँ, मेरे आँचल में बहती जीवन की सदा बयार।।

जिओ और जीने दो का मंत्र सदा ये सिखलाया।
जिसने भी जुल्म किए मुझ पर, मैंने उनको भी अपनाया।।
भेदभाव न किया कभी भी, मैंने दिया सबको ही प्यार।
मैं भारत हूँ, मेरे आँचल में बहती जीवन की सदा बयार।।

अवतरित हुए शिव मुझमें, किया मुझे गौरव प्रदान।
मेरे कण-कण में गुंजित है, भगवन तेरा ही गीताज्ञान।।
सभ्यता और संस्कृति के, पहनाए मैंने सबको ही हार।
मैं भारत हूँ, मेरे आँचल में बहती जीवन की सदा बयार।।

जर्जर हो चुकी ये धरा मेरी, नूतन परिवर्तन मांग रही।
पवित्रता के प्रकंपन का, सहयोग आपसे माँग रही।।
मुझे पुनः नवजीवन दो, कर दो इतना सा उपकार।
मैं भारत हूँ, मेरे आँचल में बहती जीवन की सदा बयार।।

मिलकर चलो सभी आपस में, मत छीनो किसका अधिकार।
मेरे प्यारो, अब तुम ये हिंसा का बंद करो व्यापार।।
एक पिता की सन्तान सभी, आत्म स्नेह का हो संचार।
मैं भारत हूँ, मेरे आँचल में बहती जीवन की सदा बयार।।

फिर से स्वर्णिम युग का मुझसे ही नया सवेरा है।
मेरी गोद में ही देवों का पावन सुखद बसेरा है।।
फिर भर जाएंगे मेरे सर्व खजानों के भंडार।
मैं भारत हूँ, मेरे आँचल में बहती जीवन की सदा बयार।

रूहानी प्यार

■■■ ब्रह्माकुमार सन्तोष, ज्ञानामृत, शान्तिवन

अखबार में छपी एक खबर पर जब मेरी नज़र पड़ी तो मैं सोचता ही रह गया। खबर थी कि Love has killed more people than terrorism in India, according to statistics (आतंकवाद से ज्यादा लोग प्यार के कारण मरे हैं)। मन सोचने पर विवश हो गया कि ये कैसी खबर है! ये कैसा प्यार है! सुना था कि प्यार इन्सान को जीना सिखाता है। प्यार एक ताकत है, प्यार एक इबादत है, प्यार जिन्दगी है, प्यार बन्दगी है, प्यार से प्यारा और कुछ भी नहीं है। कुछ लोग तो प्यार को ईश्वर तक मानते हैं (Love is God कहते हैं)। प्यार खुशी, प्यार हँसी, प्यार चाहत, प्यार मुस्कराहट, प्यार अजन्मी और अमर ऊर्जा है, जो हमारे जीने की वजह है। प्यार हमें सकारात्मकता देता है। प्यार एक अभिव्यक्ति है मन की, प्यार निर्मल है। प्यार के बिना जीवन नीरस है। प्यार एक अहसास है, एक अनुभूति है। फिर ये कौन-सा प्यार है जिसमें मौत मिल रही है। क्यों लोग प्यार में अपने जीवन को समाप्त कर रहे हैं? क्यों? क्या यही प्यार है?

टाईम्स ऑफ इण्डिया में छपी एक रिपोर्ट के मुताबिक 2001 से 2015 तक 38585 लोग प्यार के लिए मरे हैं। इसमें आत्महत्या एवं हत्या दोनों शामिल हैं। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार, भारत में अब तक (एफ.आई.आर के अनुसार) 79189 प्रेम के कारण हुई आत्महत्याओं की संख्या है एवं 26000 प्रेम-प्रसंगों के कारण हुई हत्याओं की संख्या है। विश्व में प्रति वर्ष लगभग 800000 से 1000000 लोग आत्महत्या करते हैं और इनमें आधे से ज्यादा कारण प्रेम-प्रसंगों के हैं। भारत में इसके लिए आई.पी.सी. की धारा 506 के तहत 2 साल की जेल और जुर्माने

का प्रावधान किया गया है। फिर भी प्रति वर्ष प्यार के कारण मरने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। क्या

आपने कभी सोचा है कि आखिर क्यों हो रहा है ऐसा?

प्रेम, प्यार, इश्क कई नामों से हम इसे जानते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं -

1. दैहिक प्यार
2. साधनों और सुविधाओं के कारण होने वाला प्यार
3. रूहानी प्यार

दैहिक प्यार

प्रेम में हो रही हत्या एवं आत्महत्या का मूल कारण है दैहिक प्रेम। वास्तव में दैहिक प्रेम एक आकर्षण के कारण उत्पन्न होता है। हमें किसी का चेहरा पसन्द आ जाता है, किसी की आँखें पसन्द आ जाती हैं, किसी का बात करने का स्टाइल पसन्द आ जाता है या किसी का व्यवहार। ये आकर्षण ही होता है। आकर्षण वाला प्यार बहुत जल्दी शुरू होता है और जल्दी खत्म हो जाता है। आकर्षण ज्यादातर वासना के कारण भी होता है। वास्तव में ये प्रेम नहीं बल्कि वासना ही है, जो आकर्षण से मिलता है एवं क्षणिक होता है। यह सम्मोहन की वजह से होता है। जल्दी ही इससे मोह भंग हो जाता है और मन ऊब जाता है। यह प्रेम धीरे-धीरे कम होने लगता है और भय, अनिश्चितता, असुरक्षा और उदासी आने लगती है।



अक्सर लोग पहली नज़र में प्रेम को अनुभव करते हैं, फिर धीरे-धीरे मन में कामना, वासना एवं अनेक प्रकार की दूषित इच्छायें जागृत होने लगती हैं जिन्हें हासिल करने के लिये प्रेमी प्रयत्न करने लगते हैं। जैसे-जैसे समय गुजरता है, प्रेम कम और दूषित हो जाता है और घृणा में परिवर्तन होकर गायब हो जाता है। जब प्रेम को चोट लगती है या इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती है तो वह क्रोध बन जाता है और जब वह विक्षोभ होता है तो ईर्ष्या बन जाता है। हत्या एवं आत्महत्या का मुख्य कारण यही है।

- प्रेम जब क्रोध, ईर्ष्या या नफरत में बदल जाता है तो ऐसे में प्रेमी या तो स्वयं को खत्म कर देते हैं या फिर दूसरों को मार देते हैं।
- प्रेम में चोट लगने के कारण भी आत्महत्या या हत्या कर देते हैं।
- इच्छाओं की पूर्ति न होने पर स्वयं को समाप्त कर लेते हैं।
- प्रेम में रुकावट डाले जाने पर भी प्रेमी रुकावट डालने वालों को खत्म कर देते हैं।

वास्तव में दैहिक प्रेम, देह से उत्पन्न होकर देह के साथ ही खत्म हो जाता है। इसे हम सच्चा प्रेम नहीं कह सकते क्योंकि यह अस्थायी है। आज ज्यादा, कल कम और धीरे-धीरे खत्म हो जाता है। कबीर जी ने कहा है,

घड़ी चढ़े, घड़ी उतरे, वह तो प्रेम न होय,
अघट प्रेम ही हृदय बसे, प्रेम कहिए सोय।

साधनों और सुविधाओं के कारण होने वाला प्यार

जो प्रेम सुख-सुविधा के कारण होता है वह भी अस्थायी होता है क्योंकि उसमें स्वार्थ और लोभ छिपा हुआ होता है। इसमें प्यार मात्र दिखावट या बनावट होता है, वास्तविक नहीं। उदाहरण के लिए, यदि किसी गरीब लड़के या लड़की को किसी अमीर

लड़के या लड़की से प्यार हुआ, तो गरीब सुख-सुविधाओं की प्राप्ति के लिए प्यार का दिखावा करता रहेगा परन्तु वह प्यार, सच्चा प्यार नहीं होता है। जैसे-जैसे उसकी स्वार्थ-पूर्ति में बाधा आने लगेगी या सुविधायें मिलनी बन्द हो जायेंगी वैसे-वैसे प्यार भी कम होने लगेगा। ऐसे प्रेमियों के लिए संत कबीर जी ने बहुत अच्छी बात कही है –

प्रेम पियाला सो पिये, शीश दक्षिणा देय,
लोभी शीश ना दे सके, नाम प्रेम का लेय।

प्रेम-प्याला पीने वाले अपनी गर्दन भी दक्षिणा में दे सकते हैं अर्थात् कुर्बान कर सकते हैं परन्तु लोभी व्यक्ति कुर्बानी नहीं दे सकता जबकि बार-बार कहता रहेगा कि मुझे तुमसे बहुत प्यार है।

प्रेम ना बारी उपजै, प्रेम ना हाट बिकाय,
राजा प्रजा जंही रुचै, शीश देयी ले जाय।

अर्थात् प्रेम ना तो खेत में पैदा होता है और न ही बाजार में बिकता है। राजा या प्रजा जो भी प्रेम का इच्छुक हो वह अपने शीश अर्थात् गर्व या घमंड का त्याग करके ले जाये।

रूहानी प्यार

कबीर जी ने कहा है,
प्रीति बहुत संसार में, नाना विधि की सोय,
उत्तम प्रीति सो जानिए, राम नाम से जो होय।

अर्थात् संसार में अनेक प्रकार के प्रेम हैं परन्तु उत्तम प्रेम वह है जो राम नाम अर्थात् परमपिता परमेश्वर से लगे।

प्रेम प्रेम सब कोई बोले, प्रेम ना चिन्है कोई,
जा मारग हरि जी मिले, प्रेम कहाये सोई।

अर्थात् प्रेम की बात तो सब करते हैं परन्तु प्रेम को जानते नहीं हैं। जिस मार्ग में हरि मिलते हैं वही सच्चा प्रेम है।

प्रेम सिर्फ एक भावना नहीं है, वह व्यक्ति का शाश्वत अस्तित्व होता है। प्रेम शब्द का इतना दुरुपयोग हुआ है कि हर एक कदम पर इसके अर्थ को लेकर प्रश्न खड़े होते हैं। प्यार अहसास है, बन्धन नहीं। प्यार एक अनुभूति है जिसको व्यक्त करने से अधिक उसको हृदय में सृजित करने की आवश्यकता है। सच्चा प्रेम उसी व्यक्ति में हो सकता है जिसने आत्मा को पूर्ण रूप से जान लिया हो। आत्म-ज्ञान के बिना सच्चा प्रेम सम्भव ही नहीं। कबीर जी का एक दोहा है -

प्रीत पुरानी ना होत है, जो उत्तम से लाग
सौ बरस जल में रहे, पत्थर ना छोरे आग।

अर्थात् प्रेम कभी भी पुराना नहीं होता यदि वह उत्तम यानी परमात्मा से किया गया हो। जैसे सौ वर्षों तक पानी में रहने पर भी पत्थर से आग अलग नहीं होती है।

प्रेमयोगिनी मीराबाई

प्रभुप्रेम में रंगने वालों में एक नाम मीराबाई का है। मेड़ता की राजकुमारी थी मीराबाई जिसकी शादी हुई थी महाराणा सांगा के परिवार में। राजा भोजराज की पत्नी थीं। प्रभु को अपना सबकुछ माना और राजपाट, महल, दास-दासी सब कुछ छोड़ जोगन हो गई प्रभुप्रेम में।

एक बार मीराबाई वृन्दावन में बल्लभाचार्य के मन्दिर में गईं। बल्लभाचार्य के मन्दिर में ये परम्परा थी कि कोई महिला उसमें नहीं जा सकती थी। जब मीरा पहुँची तो लोगों की एक भीड़ उनके पीछे-पीछे उनको देखने के लिए उमड़ पड़ी थी। मन्दिर के द्वार पर बल्लभाचार्य ने उन्हें रोक दिया और कहा कि यहाँ स्त्री का प्रवेश निषेध है। व्याकरण में आत्मा शब्द स्त्रीलिंग है और परमात्मा शब्द पुल्लिंग है। मीरा ने कहा कि फिर आप अन्दर कैसे हो क्योंकि पुरुष तो एक ही है जो अन्दर बैठा है, बाकी सब तो स्त्री हैं। बल्लभाचार्य शर्मिन्दा हुये और उन्हें अन्दर जाने दिया। वहाँ

मीराबाई ने भजन गाया, मेरा तो गिरधर गोपाल ..। सभा में संगीत के बहुत बड़े ज्ञाता स्वामी हरिदास जी, जो तानसेन और बैजू बावरा के गुरु थे, उपस्थित थे। उन्होंने मीराबाई के भजन सुने और कहा कि मीराबाई तुमने गाया तो ठीक परन्तु राग में नहीं है। मीरा ने कहा कि मुझे मालूम है कि मैंने राग में नहीं गाया क्योंकि मनुष्य को रिझाने के लिए राग में गाया जाता है परन्तु प्रभु को रिझाने के लिए अनुराग में गाया जाता है। मैंने अनुराग में गाया है।

रूहानी प्यार सदाबहार नवीनतम रहता है। जितना इसके निकट जायेंगे उतना ही इसमें अधिक आकर्षण और गहनता आती है। यह हर पल उत्साहित रखता है। रूहानी प्रेम आकाश के जैसा है जिसकी कोई सीमा नहीं है। ये ही सच्चा प्यार है। रूहानी प्यार हमें जीना सिखाता है, न कि मरना। जिसे रूहानी प्यार हो जाये उसका प्यार दिन प्रति दिन बढ़ता ही जायेगा, कम नहीं होगा। जितना-जितना हम प्यार में खो जायेंगे उतना-उतना हमें अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती जायेगी। कभी न खत्म होने वाले सुख, निरन्तर मिलने वाली शान्ति की अनुभूति होगी।

कबीर जी ने कहा है,
सबै रसायन हम किये, प्रेम समान ना कोये,
रंचक तन में संचरै, सब तन कंचन होये।

रूहानी प्यार में रूहें जब उस साजन, प्रीतम,
माशूक, दिलवर के प्रेम में लीन हो जाती हैं तब इस संसार का कोई भी आकर्षण उन्हें आकर्षित नहीं कर पाता। बस मैं और मेरा साजन प्रभु दूसरा और कोई नहीं।

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहि,
प्रेम गली अति साँकरी, ता में दो न समाहिं।

स्वार्थ-वश किया गया प्रेम न सांसारिक प्रेम को स्थाई रख सकता है और न ही ईश्वरीय प्रेम को। प्रेम करो परमात्मा से, प्रेम ही सुख का सार है। ■■■



नफरत

नम्रचित्त बनें

जिससे नफरत होती है उसे देखते ही मानव आग-बबूला हो जाता है। उसका संतुलन बिगड़ जाता है। ऐसी स्थिति में स्थित होना, अपने ही पैर में कुल्हाड़ी मारना है। इस अवस्था में खून की रफ्तार तेज हो जाती है। बदला लेने की तरह-तरह की भावनाएँ पनपने लगती हैं। इससे हृदयाघात होने की संभावना भी हो जाती है। फिर उस व्यक्ति के ओझल होने के बाद ही धीरे-धीरे स्थिति ठीक होती है। नफरत के इस घातक प्रभाव से बचने का सहज तरीका है कि हम नम्रचित्त बन जायें। जब वह रास्ते में मिले तो एक या दो मीठे वाक्य उसे बोल दें और आगे बढ़ते जायें। इससे उसके दिल में अवश्य परिवर्तन होगा और हमारे प्रति उसके शुभ संकल्प चलने लगेंगे। इसके बाद हमें स्वयं महसूस होगा कि आधी नफरत खतम हो गयी है। अगली बार मिलने पर वैसे ही दो मीठे शब्द बोल दें, तो ऐसा महसूस होगा कि सारी नफरत खतम हो गयी और हम अपने आपको बिल्कुल हल्का अवश्य पायेंगे। फिर अगली बार से प्रेम से बात-चीत होने लगेगी। नफरत की बीमारी को भगाने के लिए नम्रचित्त बनना एक अचूक दवा है।

योग की सिद्धि में बाधक है नफरत

नफरत को अंदर पाले रखने से अगर उस व्यक्ति के द्वारा कोई काम होने वाला रहता है तो नहीं हो पाता, इससे परेशानी बढ़ जाती है। आज नफरत के कारण ही हमारी मूल नैतिकता का पतन हो गया है, मात्र दिखावे के रूप में कुछ रह गयी है। इस दुनिया में नफरत का जाल बिछा हुआ है। हर रोज कोई नफरत वाली वाणी बोल देता है, नफरत वाला कार्य कर देता है, नफरत वाली चलन चलता है। तो हम कितनों से नफरत करके अपने आपको परेशान करते रहेंगे। हम यह समझें कि जैसा उसे रोल मिला है, इस सृष्टिमंच पर आकर वैसे अपना रोल प्ले कर रहा है। उसके नफरत के रोल को देखकर या सुनकर हम क्यों प्रभावित हों? हम अपने स्नेह, सहयोग और सहानुभूति के पार्ट को अच्छे से खेलें, तभी हमारी

शेष भाग पृष्ठ 31 पर...

■■■ ब्रह्माकुमारी उषा, जटही पोखरा, छपरा (बिहार)

नफरत को हम खुद ही अपनाते हैं और बार-बार नफरत करने से यह हमारा संस्कार बन जाता है। हमारी नफरत को देखकर दूसरा भी उसे अपना लेता है। इस प्रकार संक्रामक रोग की तरह यह संस्कार फैलता जाता है। आज नफरत की दुनिया ही बन गई है। नफरत हमारी अच्छी सोच को मन से उड़ा देती है। मन-बुद्धि नफरत के समय दूषित हो जाते हैं, चेहरा उदास हो जाता है, खुशी गुम हो जाती है। इससे शरीर के तंतुओं पर बहुत बुरा असर पड़ता है जिस कारण हम तरह-तरह की बीमारियों के शिकार बन जाते हैं। खुद इस कचड़े को अपना कर अपना घात कर बैठते हैं। नफरत बहुत बड़े दुश्मन अहंकार को जन्म देती है। अहंकार आत्मा को गर्म कर देता है और जब आत्मा गर्म हो जाती है तो इसके तीनों कर्मचारी मन-बुद्धि और संस्कार भी गर्म हो जाते हैं, जिस कारण ये ठीक काम नहीं कर पाते हैं।

नफरत न करने का दृढ़ संकल्प लें

नफरत से छुटकारा पाने के लिए जैसे-जैसे हमने इसे अपनाया है, वैसे-वैसे इसको छोड़ना पड़ेगा। अगर किसी चीज को लिया जा सकता है तो उसे छोड़ा भी जा सकता है। इसके लिए दृढ़ संकल्प करें कि हमें किसी से नफरत नहीं करनी है। बुद्धि से सत्य-असत्य का निर्णय कर नफरत का परित्याग कर दें। असत्य को अपनाने से ही अंदर घृणा और अहंकार पैदा होते हैं।

आन्तरिक शक्तियों का संचय

■ ■ ■ ब्रह्माकुमार विपिन, सारनाथ, वाराणसी



यादगार शास्त्र महाभारत में प्रसंग आता है कि बहुत काल से आँखों पर बंधी पट्टी को खोलकर जब गान्धारी ने अपने पुत्र दुर्योधन के शरीर को निहारा तो शरीर वज्र का हो गया। यह शक्ति के संचय से प्राप्त असाधारण परिणाम का उदाहरण है।

आत्मा में है असीमित ऊर्जा का भण्डार

हम जानते हैं कि अविरल गति से बहती नदी के जल को बांध के द्वारा संचित कर उससे विद्युतीय ऊर्जा उत्पन्न की जाती है। विद्युतीय ऊर्जा में असीमित शक्ति है जिससे अनेक कार्य संचालित एवं सम्पादित किये जाते हैं। इसी प्रकार अचेतन तन को चेतन बनाने वाली आत्मा में भी असीमित ऊर्जा का भण्डार है लेकिन मानव अपनी कर्मेन्द्रियों से, अपनी आंतरिक ऊर्जा का अपव्यय करता रहता है जिस कारण आवश्यक कार्यों को सही रीति से सम्पन्न नहीं कर पाता। यह अनावश्यक खपत उसे अंदर से शक्तिहीन बना देती है जिससे नकारात्मक परिस्थितियों, चुनौतियों और समस्याओं का सहज समाधान कर आगे बढ़ने में वह अपने को असमर्थ महसूस करता है। यही असमर्थता उसे तनावग्रस्त और अवसादयुक्त कर देती है जिससे जीवन बोझिल एवं अनुपयुक्त प्रतीत होने लगता है। नकारात्मक प्रवृत्तियों एवं चुनौतियों का सामना करने एवं स्वयं को सन्तुलित रख सफलता पाने के लिए आवश्यक है ऊर्जा का संचयन।

सारे दिन में अनेकों ऐसे दृश्य हम अपनी आँखों से देख लेते हैं, जिनका जीवन से कोई सरोकार नहीं। हम अनेक विकृत, घृणित, नकारात्मक गतिविधियों को

आँख रूपी कैमरे के द्वारा कैच कर दिमाग रूपी मेमोरी में भरते रहते हैं। इस कार्य में हम आंतरिक ऊर्जा का अपव्यय कर रहे होते हैं। जितना नज़रों से कम एवं केवल आवश्यक दृश्यों को ही देखेंगे उतना आत्मा में दिव्य शक्तियों का संचयन होगा और दृष्टि प्रभावशाली होगी।

बुरा न सोचो

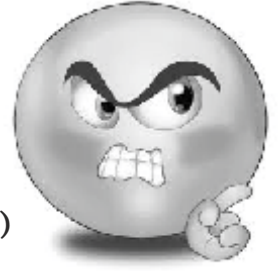
इसी प्रकार हमारी अन्य अनेक कर्मेन्द्रियाँ जैसे कान, नाक, जीभ आदि स्वर, गंध, रस आदि को महसूस करती हैं। इन का भी हम अत्यधिक अनावश्यक उपयोग कर रहे हैं जिससे हमारी आंतरिक शक्तियाँ नष्ट होती जा रही हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने तीन बंदरों के माध्यम से मानव को शिक्षा दी कि बुरा न देखो, बुरा न बोलो, बुरा न सुनो। वर्तमान समय विश्वपिता परमात्मा शिव कह रहे हैं कि बुरा न देखो, बुरा न बोलो, बुरा न सुनो के साथ-साथ बुरा सोचो भी नहीं। नकारात्मक सोच ही सारी बुराइयों की जड़ है। नकारात्मक देखने, सुनने, बोलने की आदत हमारी आंतरिक ऊर्जा को नष्ट कर हमें अंदर से शक्तिहीन बना देती है।

आंतरिक ऊर्जा को संचित करें

कर्मेन्द्रियों को नियन्त्रित, संयमित एवं मर्यादित रखने से आत्मिक शक्तियाँ संचित होकर हमारे मनोबल, आत्मिक बल और आंतरिक ऊर्जा को बढ़ाती हैं। जिस तरह शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति की कमी हमें अनेक रोगों से ग्रसित कर देती है, उसी प्रकार आंतरिक ऊर्जा की कमी हमें मानसिक, नैतिक एवं चारित्रिक रूप से कमजोर बनाकर पतन की ओर ले जाती है। मानव का छोटी-छोटी बातों एवं समस्याओं में उलझना, आवेश, उत्तेजना एवं क्रोधवश हो जाना, मूल्यों

शेष भाग पृष्ठ 31 पर ...

मानव का महान शत्रु क्रोध



■■■ ब्रह्माकुमार सुरेन्द्र शर्मा, पूर्व प्राचार्य, नरसिंहपुर (म.प्र.)

क्रोध एक विषधर सर्प है जिसके डसने से आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाती है। क्रोध एक मूर्छा है, अग्नि की भट्टी है, क्रोध विक्षिप्तता है, दुख की अन्तहीन कथा है। क्रोध तात्कालिक पागलपन है, क्षय रोग है। क्रोध एक मनोविकार है, नरक का द्वार है, दुख का भंडार और अनर्थों का घर है। पीड़ा का पर्याय और विवेक का दुश्मन है। क्रोध मनुष्य को अंधा बना देता है। क्रोध जब भी आता है, विवेक को नष्ट करके आता है। होश में व्यक्ति क्रोध नहीं करता। क्रोध पहला प्रहार विवेक पर करता है। विवेक गया कि क्रोध व्यक्ति को अंधा बना देता है। वह भूल जाता है कि वह क्या कर रहा है, क्या करने जा रहा है और इसका परिणाम क्या होगा? यद्यपि आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकता, कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकता, मन है लेकिन वह विचार नहीं कर सकता। क्रोध समझदारी को बाहर निकालकर बुद्धि के दरवाजे पर चिटकनी लगा देता है, मनुष्य को विचार-शून्य बना देता है।

एक भयावह सत्य घटना

एक व्यक्ति शाम को दुकान से घर आया। उसने पाँच हजार रुपये पत्नी को दिये। पत्नी भोजन बना रही थी। उसने रुपयों को वहीं चूल्हे के पास रख दिया। सर्दी के दिन थे, पास में उसका दो वर्ष का बेटा पप्पू बैठा था। माँ काम से बाहर गई, इतने में पप्पू ने रुपयों की गड्डी उठाकर जलते चूल्हे में डाल दी। अग्नि तेजी से जलने लगी। पप्पू खुश हुआ कि आग की लपटें कितनी तेज उठ रही हैं।

इतने में माँ आ गई, उसने जब यह सारा नजारा देखा तो समझने में देर न लगी। क्रोध ने उसे अंधा बना दिया। वह अपना होश-हवास खो बैठी। उसने आव देखा न ताव, अपने सुकुमार बच्चे को उठाया और जलते चूल्हे में झोंक दिया। बेटा जलकर राख हो गया। इकलौते बेटे

को क्रोध खा गया। बुढ़ापे के सहारे को क्रोध ने छीन लिया। क्षणभर के क्रोध ने जीवन भर का दुख पैदा कर दिया। क्रोध सदा दुख देता है। क्रोध की गिरफ्त में आने वाला सुखी कैसे? बिच्छू के डंक में और आराम? सर्प के दंश में और अमृत? अग्नि के स्पर्श में और शीतलता? क्रोध की गिरफ्त में और सुख? कभी नहीं।

इस दर्दनाक घटना को जब पति ने देखा, वह आग-बबूला हो गया। पत्नी के प्रति घृणा और क्रोध से भर गया और अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठा। एक धारदार हथियार से उसने पत्नी की गर्दन काटकर निर्मम हत्या कर दी। क्रोध हत्यारा है, हिंसक है, क्रूर है। क्रोध में करुणा नहीं होती। क्रोध और करुणा में जन्मजात बैर है।

सूचना पाकर पुलिस आ गई। हथकड़ियाँ डालकर उसे जेल ले गई। केस चला, मजिस्ट्रेट ने हत्या के जुर्म में आजीवन कारावास की सजा सुनाई।

एक हरा-भरा गुलशन क्रोध की आग से वीरान हो गया। एक हंसता-हंसाता, खिलता-खिलाता परिवार उजड़ गया। क्रोध सृजन नहीं, विध्वंस करता है। क्रोध विकास नहीं, विनाश करता है। करुणा में विकास है। करुणा में प्यार है। क्रोध में मार है। क्षमा में उद्धार है। क्षमा में प्रगति है। क्रोध में अवनति है। करुणा और क्षमा में दिव्यता है। घृणा और क्रोध में पशुता है।

कहा गया है-

क्रोध करना छोड़ दो, यह दुर्गुण की खान है।

पतन का है मार्ग, फिर होता नहीं उत्थान है।

भस्म होती है इसी में, मनुज की सद्भावना।

कृत्य और अकृत्य का फिर हो न सकता ज्ञान है।।

क्रोध जहर है। जहर केवल बिच्छू या सर्प में ही नहीं होता, मनुष्य में भी होता है। ध्यान हमें रखना है। क्रोध पर विजय माना सब पर विजय। ■■■

ज्ञान एवं गुणों की साझेदारी



■■■ ब्रह्माकुमार विपिन, टीकमगढ़

मान लीजिए किसी फैक्ट्री में पच्चीस लाख रुपए की एक उच्च गुणस्तर वाली (परफेक्ट ब्रांडेड) मशीन लाई गई है जिसका एक-एक पुर्जा गुणवत्तापूर्ण (क्वालिटी वाला) है और उसे शक्तिशाली ईंधन की उपलब्धता (फुल पावर सप्लाई) कराई गई है। लेकिन, इस पच्चीस लाख रुपए की मशीन में मात्र 25 हजार रुपए के रखरखाव के साधन (मेंटेनेंस के आइटम) नहीं डाले गए हैं जैसे कि चिकनाई के लिए लुब्रिकेंट (ग्रीस), मशीन को ठंडा रखने के लिए कूलेंट्स (शीतलक) और उसमें कंपन को नियंत्रित करने के लिए शॉक अब्जॉर्बर अर्थात् स्प्रिंग।

अब विचार कीजिए कि इतनी महंगी मशीन, इन मेंटेनेंस आइटम के बिना कितना समय अच्छे से चल पाएगी! लुब्रिकेंट के बिना उसके पुर्जे जल्दी ही आपस में घिस-घिस कर जाम हो जाएंगे। कूलेंट्स के बिना मशीन अंदर ही अंदर गर्म होकर के खराब होने लगेगी और स्प्रिंग के बिना तेज कंपन के कारण उसके पुर्जे अस्त-व्यस्त होकर जर्जर हो जाएंगे। यही सिद्धांत हमारे जीवन रूपी मशीनरी पर भी लागू होता है। जीवन रूपी मशीनरी चाहे ज्ञान की कितनी भी अच्छी-अच्छी बातों से सजाई गई हो। अवसर एवं सुविधाओं के अच्छे पुर्जे अर्थात् प्रबंध उसे मिले हों और सहयोग रूपी पावर सप्लाई भी प्राप्त हो लेकिन इतनी प्राप्तियों के बाद भी स्वभाव के जो सामान्य गुण होते हैं, यदि उनका जीवन में अभाव हो तो क्या जीवनयात्रा सही लक्ष्य तक पहुंच सकेगी? यदि हमारे अंदर सरलता रूपी लुब्रिकेंट नहीं होगा तो हम अपने रूखे स्वभाव या अड़ियलपन के कारण एक-दूसरे से उलझ कर जंजालों में अटक जाएंगे। अगर हमारे

अंदर धैर्य के कूलेंट्स नहीं हैं तो हम छोटी-छोटी बातों में अधीर होकर, बौखला कर टकराव में आते रहेंगे और यदि हमारे अंदर विनम्रता रूपी स्प्रिंग अर्थात् झुकने का संस्कार नहीं तो हम तोड़ते या टूटते रहेंगे।

वास्तव में स्प्रिंग भी किसी से दबती नहीं है बल्कि वह तो अपनी विशिष्टता दिखाती है, दबाने वाला उसे घंटों दबाए रहे और जैसे ही वह उसे छोड़ेगा, स्प्रिंग एक सेकंड में अपने यथारूप और स्थिति में आ जाएगी। इससे समय तो उस दबाने वाले का ही व्यर्थ गया। तात्पर्य यह है कि ज्ञानवान, बुद्धिवान या विद्वान होने के साथ-साथ गुणवान होना भी जरूरी है। परमात्मा परमात्मा को सत्यम् शिवम् सुंदरम् कहा जाता है क्योंकि वे सत्य ज्ञान के सागर भी हैं, तो सर्व गुणों की सुंदरता के भंडार भी।

दूसरी ओर, अगर हमारे स्वभाव में गुण हैं लेकिन ज्ञान अर्थात् बुद्धि और समझदारी का अभाव है तो ऐसे में गुण अक्सर भोलेपन के रूप में दिखाई देते हैं। कभी-कभी कुटिल लोग इस भोलेपन का गलत लाभ उठा लेते हैं जिससे भावनाओं को ठेस पहुंचती है। इसीलिए वास्तविक आत्मोन्नति के पथ पर अग्रसर होने के लिए आवश्यक है कि परमात्मा पिता से ज्ञान और गुणों रूपी वर्से को समान रूप से दिल में समाया जाए। उनके महावाक्यों के मनन-चिंतन द्वारा ज्ञान के सिद्धांतों की अच्छी समझ प्राप्त की जाए और गुणों की धारणा के लिए परमात्मा से सर्व संबंध जोड़कर ईश्वरीय प्रेम की अनुभूति की जाए। दिखावे, प्रलोभन, अहंकार या अपेक्षाओं के बैरियर्स तोड़ कर इन दो कदमों के बैलेंस से हमारी जीवन-यात्रा सुखद व सहज हो जाएगी। ■■■



योगाभ्यास के समय नींद का प्रकोप : इसमें बेपरवाही न हो

■■■ ब्रह्माकुमार विनायक, सोलार प्लान्ट, शांतिवन

कई पुरुषार्थियों का यह कटु अनुभव है कि कामकाज समेट कर, तैयार होकर शिवपिता की याद में खो जाने की शुभ आश रख योगाभ्यास शुरू तो करते हैं लेकिन एक असुर का विघ्न पड़ जाता है। ऊंघ नाम का एक महाअसुर अपना मायाजाल बिछा लेता है। उसमें भी, साधना के विशेष समय अमृतवेले में अगर नींद का आक्रमण होता है तो परमात्मा से वरदान लेने के बजाय इस असुर के साथ लड़ाई करने में ही समय नष्ट हो जाता है। विकारों को जीतने के बारे में जितना गंभीर होकर हम सोचते हैं उससे ज्यादा नींद के इस प्रकोप के बारे में सोचना भी जरूरी है क्योंकि विकारों को जीतने का आधार है साधना। नींद, साधना के पहले कदम पर ही हमें रोक लेती है। साधना शुरू ही नहीं हुई तो जीत का सवाल ही कहाँ रहा?

सावधान! फ्लाइट छूट जाएगी

मान लीजिए, आप का घर एयरपोर्ट से 50 मील दूरी पर है। आपको गाड़ी चलाकर एक घंटे के अंदर एयरपोर्ट पहुंच कर फ्लाइट पकड़नी है। आप गाड़ी चलाने बैठ गए। मुश्किल से दो मील तक पहुंचे होंगे और आँखें बंद होनी शुरू हो गयी। बताइये, इस हालत में क्या आप समय पर एयरपोर्ट पहुंच पाएंगे? फ्लाइट पकड़ पाएंगे? यही बात साधना के मार्ग पर भी लागू होती है। एक किनारा है आसुरी संस्कारों का, जहाँ पर हम खड़े

हैं। दूसरा है दैवी संस्कारों से संपन्न किनारा, जहाँ हमें पहुंचना है। दोनों के बीच में है साधना का मार्ग, जहाँ एक-एक श्वास सफल करने से ही हम उस किनारे तक पहुंच सकते हैं। इस गंभीर परिस्थिति में, साधना के समय पर अगर हमें नींद सताती है तो क्या हम मंजिल पर पहुंच पाएंगे? इस विघ्न को जीतने के लिए निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना बहुत ही आवश्यक है।

मस्तिष्क को गलत संकेत न भेजें

रोज की दिनचर्या और मन की चाहना, इन दोनों के अनुसार मस्तिष्क को संकेत मिलता है। डाइनिंग टेबल पर बैठते ही मस्तिष्क को यह संकेत मिलता है कि भूख बढ़ाने वाले रसायन का स्त्राव करना है और बिस्तर पर सोते ही संकेत मिलता है कि नींद लाने वाले रसायन का स्त्राव करना है। योगाभ्यास के समय अगर नींद आती है और हम उसे रोकने की कोशिश नहीं करते हैं तो मस्तिष्क समझेगा कि यह नींद का समय है इसलिए मुझे नींद लाने वाले रसायन का स्त्राव करना है। मस्तिष्क को फिर यह आदत हो जाती है और हर बार योगाभ्यास के समय उसी रसायन का स्त्राव होता रहेगा और नींद आती रहेगी। इसलिए नींद को रोकने के गंभीर और प्रामाणिक प्रयत्न से मस्तिष्क को यह महसूस कराना जरूरी है कि योगाभ्यास का समय, नींद करने का समय नहीं है ताकि वह उस रसायन का स्त्राव न करे। योगाभ्यास के समय कृपया आँखें खुली रहें। आँखें बन्द करना जैसे कि मन, बुद्धि, मस्तिष्क को अंधेरे कमरे में डालकर दरवाजा बंद कर देने के समान है।

एल.ई.डी से आँखों को बचाओ

आजकल, समय पर नींद न आने का मुख्य कारण है एल.ई.डी (लाइट एमिटिंग डायोड)। नींद आना और जाग

उठना यह एक जैविक घड़ी (बायोलॉजिकल क्लॉक) है। इसका नियंत्रण पीनियल ग्रंथी से होता है जिससे मेलैटोनिन नाम का एक हार्मोन स्रावित होता है। सोने का समय नजदीक आते ही मस्तिष्क में मेलैटोनिन स्रावित होता है और आँखें बंद होना, उबासी आना शुरू होता है। लेकिन, यह हार्मोन पूर्ण मात्रा में स्रावित तब होता है जब अंधेरा रहता है। उजाले में बहुत ही कम मात्रा में या बिलकुल ही नहीं। इसीलिए कहते हैं, लाइट बंद करो, नहीं तो नींद नहीं आती है। आजकल 95 प्रतिशत लोग, सोने से पहले एल.ई.डी. स्क्रीन के सामने काफी देर तक आँखें खोले रहते हैं, चाहे वह मोबाइल हो, टैबलेट हो, कम्प्यूटर हो या टी.वी हो। फ्लोरोसेन्ट लैम्प (प्रदीप्त नलिका) व हैलोजन की तुलना में एल.ई.डी से निकलने वाला उजाला खतरनाक साबित हुआ है, चाहे कितनी भी कम वोल्टेज का क्यों न हो।

रोज़ की इस आदत से जैविक घड़ी का संतुलन बिगड़ जाता है और मेलैटोनिन का स्रावित होना कम या बंद हो जाता है, जो नींद की गहराई को खत्म कर देता है। इससे दिन के समय ताजगी के बजाय सुस्ती और आलस्य पकड़ लेते हैं, जो योगाभ्यास में विघ्न डालते हैं। दूसरी बात, सोते वक्त मस्तिष्क को विश्राम देना जरूरी है। उस वक्त समाचार देखना, विडियो गेम्स खेलना, फेसबुक, व्हाट्सएप आदि का उपयोग करना, इससे मस्तिष्क स्लीपिंग मोड से फिर से एक्टिव मोड में आ जाता है और उसकी कार्यविधि भंग हो जाती है जिससे साधना के समय सहयोग के बदले विघ्न पड़ता है। इसलिए, सोने से पहले राजयोग का अभ्यास करें, शिवपिता से रूहरिहान करें, ज्ञान का मंथन करें पर एल.ई.डी का इस्तेमाल कृपया न करें।

पूर्णविराम लगाने का निरंतर अभ्यास

योगाभ्यास के समय कार्य-व्यवहार से अलग होकर एक जगह पर बैठ तो जाते हैं लेकिन संकल्पों को कार्य-व्यवहार से अलग नहीं कर पाते हैं। कार्य के साथ-साथ उससे जुड़े स्थान, व्यक्ति, उनके बोल-चाल आदि के बारे में संकल्प चलते ही रहते हैं और संकल्पों की गति भी तीव्र

रहती है। इनको ही व्यर्थ संकल्प कहा जाता है क्योंकि परमात्मा के साथ संबंध जोड़ना, जो योगाभ्यास का मुख्य उद्देश्य है, उसमें वे बाधा डालते हैं। जैसे काम करने से शरीर थकता है वैसे ही व्यर्थ संकल्पों से मन व बुद्धि थक जाते हैं। इस थकावट को दूर करने के लिए शुरू होती है ऊँघ। इसलिए, जो बात बीत जाती है उसको उसी समय पूर्णविराम लगाने का अभ्यास करना बहुत ही जरूरी है ताकि व्यर्थ संकल्पों की रचना का आरंभ ही न हो।

स्वयं को परीक्षा-गृह में समझो

अध्ययन कक्ष में नींद आ सकती है लेकिन परीक्षा-कक्ष में नहीं। परीक्षार्थी में चार बातें स्पष्ट दिखाई देती हैं। उसके मन, बुद्धि और शरीर संपूर्ण जागृत अवस्था में रहते हैं। एक-एक सेकेण्ड को सफल करने के लिए बीस नाखून का जोर लगाता रहता है। अन्य क्या कर रहा है, इस बात का होश तक नहीं रहता है। बीती बातें, किसी देहधारी का नाम-रूप आदि गलती से भी याद नहीं आते और खान-पान की आसक्ति शून्य रहती है। केवल एक ही लगन लगी रहती है कि एक-एक सेकेण्ड सफल हो और मार्क्स जमा हों। उसको पता है कि अगर नापास हो गया तो एक साल बरबाद होगा और इज्जत भी जाएगी। इसको ही कहते हैं एकाग्रता संपन्न स्थिति या धधकती हुई लगन की अग्नि। यह अग्नि सारे विघ्न स्वाहा कर देती है।

अतः योगाभ्यास के समय पर समझना है कि मैं परीक्षा-कक्ष में बैठा हूँ। अगर मैं गंभीर होकर शिवपिता को याद नहीं करूंगा, साधना में बीस नाखून का जोर नहीं लगाऊंगा, झुटका खाने में ही समय बिता दूंगा तो आसुरी संस्कारों को भस्म नहीं कर पाऊंगा। कच्चा फल कोई खरीदते नहीं, कच्चा खिलाड़ी कभी चुना नहीं जाता, वैसे ही पापों को भस्म करने में मैं कच्चा रह जाऊंगा तो न स्व परिवर्तन कर पाऊंगा और न ही विश्व परिवर्तन। मुझे हर श्वास योगाभ्यास में सफल करना है। इस समझ को बार-बार दोहराने से एकाग्रता जागृत होती है, जो लगन की अग्नि को प्रज्वलित करती है। इसमें नींद, आलस्य, सुस्ती, अलबेलापन आदि सब स्वाहा हो जाते हैं।

कुतूहल, एकाग्रता का मित्र

एक बच्चा पढ़ाई करने बैठा है पर उसको नींद खींच रही है। बार-बार आंखें बंद हो रही हैं और किताब हाथ से नीचे गिर रही है। अब आप टी.वी. चालू करिए और उस चैनल पर स्थिर रहिए जिस पर क्रिकेट मैच चल रहा है। आश्चर्य की बात है कि टी.वी. देखते ही बच्चे की आंखें खिल उठी, नींद में झूलता हुआ बच्चा अब तालियाँ बजा रहा है। एक सेकेण्ड में इतना बदलाव कैसे आया? कुतूहल के कारण। आगे क्या होगा? कौन जीतेगा? आदि। कुतूहल, एकाग्रता का मित्र है। एकाग्रता के समय संकल्पों की गति बहुत धीमी होने के कारण मस्तिष्क को विश्रांति मिलती है। इन दो विशेषताओं के कारण ही वैज्ञानिक लोग स्वाभाविक ही आलस्य और नींद पर विजयी रहते हैं।

हमें भी ज्ञान का मंथन करने का, योगाभ्यास की भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ जैसे कि अव्यक्त स्थिति, बीजरूप स्थिति, फरिश्ता स्थिति, गुणों और शक्तियों की स्थिति आदि को समझने का, अनुभव की गहराई में उतरने का कुतूहल होना चाहिए जो आलस्य को भगाए और एकाग्रता को शक्तिशाली बनाए। इन अभ्यासों के परिणाम से हम सागर के तले में जा सकते हैं जहाँ अनमोल रत्न, मोती मिलते हैं अर्थात् परमशांति और अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता है।

अमृतवेला व्यर्थ न चला जाए

कहते हैं, अमृत पीकर देवताएँ अमर बने। वह समय है अमृतवेला जब स्वयं भगवान आकर आत्माओं को अमरत्व का वरदान देते हैं अर्थात् गुणों और शक्तियों का दान देकर आत्म अभिमानी बनाते हैं। सर्व कमजोरियों को सहज ही जीतना है और सर्व गुण व शक्तियों में सहज ही संपन्न बनना है तो अमृतवेले का हर सेकेण्ड सफल करो। तीव्र पुरुषार्थ की नींव है यह वेला। लेकिन इस समय नींद का प्रकोप भी उग्र रहता है। नींद से संपूर्ण जागृत अवस्था में आने में समय लगता है। इसलिए, उठते ही तुरंत योगाभ्यास शुरू करने के बजाय

कुछ समय शरीर व मस्तिष्क को पढ़ने-लिखने, टहलने, गीत सुनने, दांत साफ करने आदि में व्यस्त रखना है। जिस स्थिति का अभ्यास करना है, उस के बारे में पिछली रात को ही मनन करके सोने से अमृतवेले का योगाभ्यास सफल और शक्तिशाली रहेगा। गंभीरता का गुण और इन्द्रियों को सिकोड़ने की शक्ति उस समय निरंतर प्रयोग में रहे ताकि व्यर्थ संकल्पों की धारा शुरू न हो जाए जो नींद का आह्वान करे।

शिवपिता के साथ संबंध में गहराई

संबंध में जितनी अधिक गहराई होती है उतना ही अधिक हम उसकी संवेदनाओं को महसूस कर सकते हैं। जैसे अपने प्रति माँ-बाप की संवेदनाओं को बच्चे ग्रहण करते हैं। पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते हैं तो माँ-बाप को अंदर ही अंदर जो वेदना होती है, उस दर्द को बच्चे स्पष्ट अनुभव करते हैं। वह दर्द उनके आलस्य को फिटा देता है। वैसे ही शिवपिता, जो सर्व संबंधों की सैक्रीन हैं, सागर हैं, उनके साथ संबंध इतना गहरा हो, जो हमारे प्रति उनकी शुभ आशाओं को हम ग्रहण कर सकें। कलियुग के अंत में, तमोप्रधान अवस्था में भी माँ-बाप बच्चों की उन्नति के लिए कुर्बान जाते हैं, तो शिवपिता जो प्रेम के सागर हैं उनकी शुभ आशाएँ कितनी सुंदर, सुखदाई और श्रेष्ठ होंगी? वह अनुभव हमारे आलस्य-अलबेलेपन को मिटाकर हमें उमंग-उत्साह के झूले में झुलाएगा।

करना अनिवार्य है..वरना

सदा याद रहे कि जो पुरुषार्थ अब मैं करूंगा वह केवल एक बार के लिए नहीं बल्कि कल्प-कल्पांतर के लिए निश्चित हो जाएगा। अब नहीं तो कभी भी नहीं! नींद को जीत कर, गंभीरतापूर्ण योगाभ्यास के द्वारा माया पर विजयी बनते हैं तो कल्प-कल्प के विजयी रहेंगे। आलस्य, अलबेलेपन के वश योगाभ्यास के समय को ऊंघते हुए बिताते हैं, तो वह हार भी अविनाशी ही होगी। यह कटु सत्य केवल ज्ञान का शब्द बनकर न रहे, पर एक अस्त्र बनकर जागृत करता रहे, जो नींद को भगाए और लगन को ज्वालामुखी बनाए। ■■■

अब नहीं तो कब नहीं

■ ■ ■ ब्रह्माकुमारी रागिनी, नवनगर, हुबली (कर्नाटक)

आज की कलियुगी दुनिया में दुख बढ़ते जा रहे हैं। गरीब पैसों के पीछे और अमीर स्वास्थ्य के पीछे भाग-दौड़ कर रहे हैं। आपसी प्यार की भावना की कमी के कारण घर-घर में समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं। विकारों के वशीभूत होकर मैं और मेरा शब्द में फँस कर मनुष्य अनेक परेशानियों में डूबे हुए हैं।

बच्चे का जन्म होने से लेकर उसके एक गृहस्थी बनने तक माता-पिता अपनी जिम्मेवारी समझते हैं। बेटा ठीक रीति से पढ़कर नौकरी या धन्धे में लग गया तो अच्छी बात है। अगर बेटा कुसंग से जुड़कर गलत खान-पान के वश हो गया तो माँ-बाप दुख भोगते हैं।

लोभ-मोह और स्वार्थ

अगर बेटा ठीक से कमाने लगा तो फिर उसकी शादी करते हैं। शादी के बाद दूसरे घर की लड़की, विपरीत संस्कार लेकर आयेगी तो माँ-बाप दुखी होंगे। बहू सोचती है कि पति मेरी बात को ही माने, माँ-बाप सोचते हैं कि बेटा हमारी बात को ही माने। इन दोनों के बीच में बेटा तनाव में आ जाता है। यही बहू अपनी बच्ची के जन्मदिन पर हजारों रुपये खर्च कर बड़ी धूम-धाम करती है परन्तु बूढ़े माँ-बाप की दवाई के लिए उसके पास पैसा बचता नहीं है। बुजुर्गों की पेन्शन के पैसे भी अपने पर खर्च कर लेते हैं। फिर बूढ़े माँ-बाप को वृद्धाश्रम में पहुँचाने में भी संकोच नहीं करते। बेटे-बहू के लोभ-मोह और स्वार्थ के कारण माँ-बाप को दुख भोगना पड़ता है। आजकल पचास प्रतिशत ऐसे ही परिवार हैं।

सहनशक्ति की कमी

एक अन्य परिवार में माँ-बाप अपनी बेटा को अच्छी तरह से पढ़ाकर, अच्छी तरह से शादी करते हैं लेकिन पति उस लड़की की बात को नहीं मानता, सिर्फ माँ-बाप की बात को मानता है। वह लड़की लाख कोशिश कर चुकी परन्तु पति नहीं बदला। अतः तलाक देकर माँ-बाप

के घर लौट आई है। लड़की के माँ-बाप बहुत दुखी हैं। लड़के के माँ-बाप लड़के की दूसरी शादी करते हैं। आजकल एक तरफ सहनशक्ति की कमी और दूसरी तरफ संस्कार मिलन न होने और कर्मों की गुह्य गति को न जानने से जीवन में दुख-अशान्ति बढ़ रहे हैं।

जीवन जीने की कला का अभाव

और एक परिवार में, बेटा और बहू बड़े शहर में मकान बनाकर रहने लगते हैं। शाम को घर लौटकर आने के बाद काम के नाम पर दोनों में झगड़ा होता है। बीवी कहती है, 'मैं रसोई का काम कर लूँगी, आप दूसरा काम कर लो।' पति कहता है, 'मैं आदमी हूँ, घर का काम पूरा आपको ही करना पड़ेगा।' लाखों रुपये वेतन हर महीना पा लेने के बाद भी घर में दोनों को सुख-शान्ति नहीं है क्योंकि जीवन जीने की कला को नहीं जानते हैं।

मनरूपी दर्पण हुआ काला

कलह-क्लेश, ईर्ष्या, द्वेष से भरा हुआ आज का इन्सान तनावमुक्त होने के लिए बहुत प्रयास कर रहा है। घर-घर में इस प्रकार की ढेरों कहानियाँ भरी हुई हैं। इनका कारण यह है कि इन्सान विकारों के वशीभूत हो चुका है। ज्यादातर लोगों के मन का दर्पण पूरा काला हो चुका है। इस दर्पण में अच्छा-बुरा भी नहीं दिखाई दे रहा है। जीवन खुशनुमा बनाना है तो सबसे पहले जीवन जीने की कला सीखनी है और शक्तियों को, गुणों को, नैतिकता को, मूल्यों को पुनः प्राप्त करना है। धन-दौलत, सुख-शान्ति, प्रेम-स्नेह-स्वास्थ्य-खुशी पाने के लिए जप-तप, यज्ञ, भक्ति आदि से भी आज का मानव थक चुका है। इनसे प्राप्ति होती भी है तो अल्पकाल की होती है।

त्याग दें गलतफहमी को

अब भक्ति का फल देने के लिए स्वयं भगवान इस धरती पर आ चुका है। इस सत्य की जानकारी के लिए

शेष भाग पृष्ठ 31 पर ...

बाबा ने कहा, बच्चा मन-बुद्धि से समर्पित है

ब्रह्माकुमार विनोद जैन, शान्तिवन (ट्रोमा हॉस्पिटल)

मेरा जन्म उ.प्र. के मेरठ शहर में सन् 1943 में हुआ। माता-पिता धार्मिक विचारों वाले थे। पिताजी नियमों में इतने सख्त थे कि जब तक हम जैन मंदिर न जायें तब तक नाश्ता नहीं करना होता था। सन् 1963 में धनबाद में इंजीनियरिंग में चयन के बाद मैं इंडियन स्कूल ऑफ माइन्स में इंजीनियरिंग करने लगा और वहीं हॉस्टल में रहने लगा। हॉस्टल के नजदीक जैन मंदिर नहीं था इसलिए दर्शन किये बिना नाश्ता करने में बाधा आती थी। मेरा मन अशांत रहने लगा। एक जैन साधु से मिला तो उन्होंने कहा, पारसनाथ मंदिर (धनबाद से 50 कि.मी. दूर जिसे शिखर जी के नाम से जाना जाता है) की तीन बार यात्रा करेंगे तो आपको भगवान मिल जायेगा। उस यात्रा के नियम कड़े थे जैसेकि रात को 12 बजे यात्रा प्रारंभ के समय ठंडे पानी से स्नान करना, नंगे पाँव और निराहार रहकर ही जाना और आना, यात्रा के दौरान किसी भी व्यक्ति, वस्तु का सहारा नहीं लेना।

अनोखे राजयोग का परिचय

उस समय मैं युवक था। मैंने चार दिन में चार यात्रायें लगातार कर लीं। यात्रायें पूरी कर धनबाद लौटा। इंजीनियरिंग का पोस्ट ऑफिस अलग था। दोपहर लंच से पहले मैं पोस्ट ऑफिस गया। मैंने एक संस्थान से योग की पुस्तक मँगवाई थी, वह पोस्ट से आई थी। मैं उसे देख रहा था। उन दिनों ब्रह्माकुमार मोहन सिंघल भाई भी उसी कॉलेज में इंजीनियरिंग कर रहे थे। वे भी पोस्ट ऑफिस के सामने खड़े थे। उन्होंने मुझे योग की पुस्तक का अवलोकन करते देखा। उन्होंने कहा, इस योग से आपको एक जन्म का स्वास्थ्य लाभ मिलेगा परंतु मैं ऐसा राजयोग जानता हूँ जिससे आपको 21 जन्म का लाभ मिलेगा। यह सुनते ही अंतरात्मा जागृत हो गई। मुझे यह बात जैन धर्म के बिल्कुल अनुकूल लगी। जैन धर्म भी कहता है, आप इस जन्म में जो करेंगे, वो आपको आगे के जन्मों में मिलेगा। अतः मैं उनसे योग के बारे में अधिक जानने के लिए उत्सुक हो गया लेकिन वो ज्ञान में नये-नये थे इसलिए थोड़ा-थोड़ा बताते थे।



अपने मस्तक में लाइट दिखाई दी

एक दिन मोहन भाई सिन्धी गये, वहाँ सेवाकेन्द्र था और ब्रह्माकुमारी बहन भी रहती थी। वहाँ से वे एक पर्चा लेकर आये। पर्चे में शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य था। मैंने पर्चा पढ़ा, बहुत अच्छा लगा। उन्होंने कहा, अब शीघ्र ही धनबाद में भी सेन्टर खुलने वाला है तब आपको विस्तार से राजयोग के बारे में जानने को मिलेगा। आठ मार्च, सन् 1964 को धनबाद में सेन्टर खुल गया। वहाँ कानपुर वाले गुप्ता जी, ब्रह्माकुमारी सुरेन्द्र बहन, ब्रह्माकुमार संतराम वकील, गंगे दादी जी सेवार्थ आये। मुझे अगले दिन (9 मार्च को) सेन्टर आने का निमंत्रण मिला। जैसे ही मैंने दायों पैर सेवाकेन्द्र के अंदर रखा, मुझे मेरे मस्तक में लाइट दिखाई दी अर्थात् आत्म-अनुभूति हुई। उसी समय मुझे निश्चय हो गया कि भगवान यदि मिलेगा तो इसी सेवाकेन्द्र में मिलेगा।

मैं साइंस का विद्यार्थी था इसलिए मन में प्रश्न उठने स्वाभाविक थे पर मैंने निश्चय किया कि मैं प्रश्न नहीं पूछूँगा, बहन जो कहेगी, मानूँगा।

फिर मेरा कोर्स शुरू हो गया। बहन ने पूछा, भगवान कहाँ रहता है? मैंने कहा, सब जगह। उन्होंने कहा, भगवान तो परमधाम में रहता है। मैंने कहा, ठीक है, परमधाम में रहता है। आत्मानुभूति के कारण मन इतना आश्वस्त हो गया था कि तर्क-वितर्क रह ही नहीं गये थे।

हॉस्टल में भी आश्रम से पालना

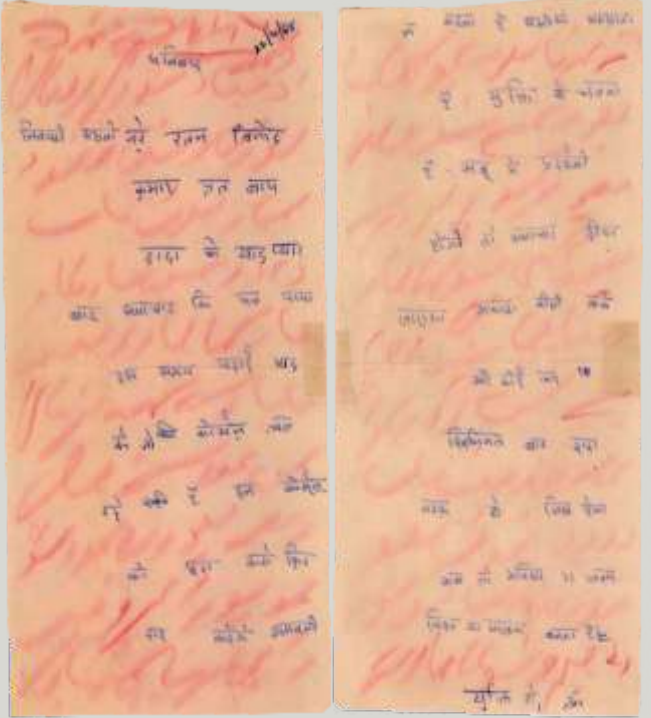
सन् 1964 में बाबा की मुरलियाँ चलती थीं, महापरिवर्तन होने वाला है। मैंने और मोहन सिंघल भाई ने निर्णय लिया कि हम बाबा की याद में हॉस्टल में खाना खुद ही बनायेंगे। हमने बनाना शुरू कर दिया। कुछ दिन तो ठीक चला परंतु कुछ शरारती इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स ने एक दिन हमारे भोजन-स्थान को अस्त-व्यस्त कर दिया। इससे हमारा अलग से खाना बनाने का उमंग फीका पड़ गया। फिर हम दोनों ने बाबा को सारा समाचार लिखा। बाबा का डायरेक्शन आया कि आज से दोनों बच्चों का खाना धनबाद सेवाकेन्द्र पर ही बनेगा। निमित्त दादी देवी सब्ज ने तीन साल इसे प्यार से निभाया। आश्रम से टिफिन हॉस्टल में आ जाता था।

मन-बुद्धि से समर्पित का वरदान मिला

मुरलियों में सृष्टि-परिवर्तन के महावाक्य सुनकर मैंने बाबा को पत्र लिखा, बाबा, मैं चार साल की इंजीनियरिंग नहीं करना चाहता। बाबा ने कहा, नहीं बच्चे, इसे पूरा करो, फिर बाबा राय करेंगे। इंजीनियरिंग पूरी करने पर मैंने बाबा को पुनः पत्र लिखा, बाबा, पढ़ाई तो पूरी हो गई पर मैं अभी नौकरी नहीं करना चाहता। बाबा ने कहा, बच्चे, दो साल का स्नातकोत्तर (Post Graduate) करो। यह पढ़ाई भी पूरी करके मैंने पुनः बाबा को कहा, बाबा, मैं ईश्वरीय सेवा में समर्पित होना चाहता हूँ, नौकरी नहीं करना चाहता। बाबा ने मुझे वरदान दिया, बच्चे, तुम मन-बुद्धि से समर्पित हो। शरीर से समर्पित होना आवश्यक नहीं। मेरी आज्ञा से तुम नौकरी करो। फिर मैं माइन्स में सेफ्टी ऑफिसर (सुरक्षा अधिकारी) के रूप में नियुक्त हो गया।

कर्मों का लेखा सौपा बाबा को

बाबा ने मुरलियों में कहा, इस जन्म में जो पाप आपसे हुए हैं (जाने या अनजाने में) वो मुझे लिखकर दो



तो मैं आधा माफ कर दूँगा। मैंने 64 पन्नों की नोटबुक ली और बचपन से लेकर उस समय (22 साल की आयु) तक किये गये जिन-जिन कर्मों की स्मृति थी, सब लिख दिये। उस नोटबुक को लेकर पहली बार मधुबन आया। बाबा ने मुझे झोंपड़ी में मिलने का समय दिया। मैं झोंपड़ी के बाहर खड़ा था। बाबा ने मुझे अंदर बुलाया। मैंने कहा, बाबा, मैं पाप लिखकर ले आया हूँ, आधे माफ कर दो। बाबा ने कहा, बच्चे, बाबा यह लिखत नहीं पढ़ेगा, बाबा को अपने मुख से सुनाओ। मैंने रजिस्टर पढ़ना शुरू किया और देखा, बाबा का राइट हैण्ड हलका-सा हिलता था मानो मेरे पापों से मुझे 50% मुक्ति मिलती जा रही थी। बाबा के सामने बैठकर मुझे लगा, मैं दर्पण के सामने बैठा हूँ, छिपा कैसे सकता हूँ। पढ़ते-पढ़ते मुझे अपनी कुछ और गलतियाँ याद आईं, मैंने वो भी सुना दीं यह सोचकर कि अभी तो सुनहरा अवसर है, नहीं तो ये सौ प्रतिशत रह जायेंगी। सुनाने के बाद मैं एकदम हलका हो गया, वो बातें मुझे दुबारा याद नहीं आईं और बाबा का मुझ पर बहुत विश्वास बैठ गया।

बाबा से ऑटोग्राफ मांगे

मुझे बड़े लोगों के ऑटोग्राफ लेने का शौक था। मैं आटोग्राफ बुक लेकर गया था। मैंने बाबा को कहा, बाबा, आटोग्राफ बुक में सिगनेचर कर दो। बाबा ने कहा, ईशू बच्ची को दो, फिर बाबा बतायेंगे। अगले दिन मैं ईशू दादी के पास गया और पूछा, बाबा ने साइन किये? ईशू दादी कहती हैं, बाबा कोई ह्यूमन बिंग (देहधारी मनुष्य) नहीं हैं। मैं समझ गया कि साइन की कोई वेल्यू नहीं है जिसने आदि-मध्य-अंत का सारा रहस्य सुनाकर हमारे लिए मुक्ति-जीवन्मुक्ति का द्वार खोल दिया, उनसे इस छोटी बात का क्या आग्रह! इसके बाद मेरा वह शौक सदा के लिए छूट गया।

बाबा की हर बात राज़ भरी

सन् 1968 में मधुबन में दो भाई जम्मू के और मैं, तीन की पार्टी थी। बाबा ने कहा, बच्चे, आज बाबा आपसे मिलेंगे। हम तीनों बाबा के कमरे के दरवाजे के आगे खड़े थे। बाबा ने लच्छू दादी को कहा, बाबा से मिलने के लिए इन दो भाइयों को पहले बुलाओ और विनोद को कहो, इंतज़ार करे। यह देख बहुत संकल्प चले कि मैं इतना नज़दीक हूँ, मुझे पहले क्यों नहीं बुलाया? फिर वो दोनों बाहर आये और बाबा ने मुझे बुलाया। बाबा ने कहा, बच्चे, मैं जानता हूँ, आप क्या सोच रहे हो? तुम सोच रहे हो ना कि मुझे पहले क्यों नहीं बुलाया? इसका कारण है, मुझे आपको गोद देनी थी, उन दोनों को नहीं देनी थी। यदि आपको पहले बुलाता तो वे पर्दे में से आपको गोद देते हुए देखते और उनके संकल्प उठते इसलिए ऐसा किया। जब बाबा की गोद में गया तो मुझे अव्यक्त स्थिति की अनुभूति हुई। एकदम लाइट की अनुभूति। बाबा का शरीर रूई की तरह कोमल था। बैठते ही अशरीरी हो जाते थे, गहन सुख-शांति की अनुभूति होती थी।

कर्मों द्वारा सीख

बाबा डायरेक्ट कोई बात नहीं कहते थे, कर्मों से सिखाते थे। एक बार मधुबन में गेहूँ आये। भोली दादी ने कहा, बाबा, गेहूँ साफ करने हैं और भाई-बहनें नहीं मिल रहे हैं। बाबा ने कहा, बोरी खोलो और थालियाँ ले आओ। बाबा ने गेहूँ साफ करने शुरू कर दिये, बाबा को

देख सब भाई-बहनें आ गये, आधे घंटे में ही सारे गेहूँ साफ हो गये।

मात-पिता का प्यार

सन् 1965 तक तो मातेश्वरी साकार में थी। इसके बाद बाबा ने माता और पिता दोनों का प्यार देना शुरू कर दिया। रात्रि क्लास के बाद बाबा बच्चों के कमरों में चक्कर लगाते थे, उनके साथ लच्छू दादी होती थी। हमारे ओढ़ने के कपड़े को बाबा हाथ लगाकर देखते थे कि बच्चे को ठंडी तो नहीं लगेगी। फिर लच्छू दादी को कहते थे, इनको एक कंबल और दो। मच्छरों से बचाने के लिए हर कमरे में स्प्रे कराते थे। फिर पूछते थे, बच्चे, दूध पिया? फिर लच्छू दादी को कहते थे, इनको दूध दो।

भगवान के हाथ का अंगूर

एक बार बाबा ने मुरली पूरी की और झोंपड़ी के पास बगीचे में गये। मैं भी बाबा के साथ था। बाबा बहुत लंबे थे, उन्होंने एक अंगूर तोड़कर मेरे मुख में डाल दिया। फिर पूछा, कैसा है? मैंने कहा, बाबा बहुत मीठा है। मन में भावना उठी, भगवान के हाथ से अंगूर मिले, उससे ज्यादा मीठा क्या होगा? एक बार मैंने बाबा से प्रार्थना की, बाबा, मुझे आपके साथ फोटो खिंचवाना है। पहले बाबा ने कहा, बाबा फोटो नहीं खिंचवाते, फिर कहा, अच्छा चंद्रहास को बुलाओ। मैंने बुलाया। बाबा खड़े हो गये। बाबा ने चंद्रहास को डायरेक्शन दिया, फोटो निकालो। चंद्रहास ने फोटो निकाला। तीन फोटो निकाले, फिर बाबा चले गये, रुके नहीं। लेख के साथ छपा फोटो वही है जिसमें बनारस की सुरेन्द्र बहन तथा एक थाइलैंड का भाई भी है।

सुप्रीम सर्जन बाबा

बाबा के पास आठ-दस गऊएँ थीं जो बहुत सुंदर, स्वस्थ थीं। बाबा ने उनके गोपी आदि नाम रखे थे। एक बार बाबा ने गायों के लिए भूसा मँगाया। भूसा आँगन में उतारा गया। हम पाँच कुमारों ने उसे टोकरीयों में भरकर पीछे जहाँ गाय रहती थी, वहाँ जमा कर दिया। बाबा हिस्ट्री हॉल के कोने पर खड़े थे। हम जब टोकरी भरकर ले जाते तब भी और जब लौटते थे तब भी, बाबा बड़ी पावरफुल दृष्टि देते थे। उस सेवा में बहुत मज़ा आया। सेवा पूरी होने के बाद मैं बाबा के पास गया, मैंने कहा,

बाबा, गले में धूल चली गई है। बाबा ने मुझे अपने हाथ से गुड़ खिलाया, जिसे खाते ही गला एकदम ठीक हो गया। मुझे बाबा में सर्जन का रूप नज़र आया।

बाबा की समय पावंदी

जब मधुबन आता था, बाबा मुझे पांडव भवन में रात के पहरे की ड्यूटी देते थे। मुझे नशा चढ़ता था कि भगवान ने मुझमें विश्वास रखा है, सुरक्षा की जिम्मेवारी दी है। बाबा कहते थे, सब्जी काटो, रोटी बनाओ। इस प्रकार भण्डारे की सेवा में भी बहुत मज़ा आता था। जिस दिन हमें लौटना होता था, रास्ते का भोजन हमें खुद बनाना होता था। बाबा भंडारे में ठीक 6 बजे आते थे और दृष्टि देते थे। बाबा का आना इतना एक्स्ट्रा होता था जो हम अपनी घड़ी मिला सकते थे।

बच्चे हर बात में आगे

एक बार थाइलैंड के एक शहर के गवर्नर का लड़का आबू में आया। वह बनारस यूनिवर्सिटी में संस्कृत पढ़ रहा था। उसके पास कैमरा था। वह ब्रह्मा भोजन में शामिल हुआ। वह ब्रह्मा बाबा का फोटो लेने लगा। बाबा ने कहा, पहले मेरे बच्चों का फोटो लो। बाबा हर बात में अपने बच्चों को आगे रखते थे।

बाबा रमणीक भी थे

बाबा बहुत रमणीक थे। हम मधुबन में कभी-कभी ईश्वरीय सेवा से संबंधित मीटिंग करते थे और सेवा की योजना को फाइनल करने के लिए बाबा को बुलाते थे। एक बार बाबा आये और हिस्ट्री हॉल में उस संदली पर बैठ गये जिस पर बच्चे बैठते थे। हिस्ट्री हॉल में बाबा तथा मम्मा की अलग-अलग संदली थी और बच्चों के लिए भी थी। बाबा को बच्चों की संदली पर बैठे देख सब अंदर-अंदर मुसकराने लगे। तब बाबा ने कहा, पता है आज मैं बच्चों की संदली पर क्यों बैठा हूँ, इसलिए कि आज मैं बच्चा बनकर आया हूँ, बाप नहीं। टोली बाँटते समय बाबा कहते थे, जिसने दो साल से झूठ नहीं बोला, वह टोली बाँटे। इस प्रकार बाबा सेवा भी करवाते और अंतर्मुखी भी बनाते। बाबा किसी को समझानी देते थे तो पहले उस आत्मा का गुण वर्णन करते थे। फिर कहते थे, तुम सोना तो हो, थोड़ा-सा सुधार कर लोगे तो सोने में सुहागा हो जायेगा।

बाबा का दिया जीवन बाबा को समर्पित

मधुबन से वापस लौटते समय मैं बाबा से छुट्टी लेने गया। बाबा ने आंगन में खड़े होकर रूमाल हिलाकर छुट्टी दी। फिर टैक्सी चल दी। लगभग 15 मिनट के बाद टैक्सी रुक गई। पीछे का एक पहिया निकला और धुरी में पुनः फँस गया। टैक्सी ड्राइवर ने कहा, यह पहली बार हुआ है कि पहिया निकला और वापस फँस गया। मेरे मन में आया कि बाबा ने ही मुझे बचाया है। यह जीवन बाबा का दिया हुआ जीवन है अतः बाबा की सेवा के लिए ही समर्पित है। ■■■

ओ प्यारी दादी गुलज़ार

■■■ ब्र.कु. सन्तोष, ज्ञानामृत

मिटा कर अपनी हस्ती को,
हमें कर दिया गुल-ए-गुलज़ार
**ओ प्यारी दादी गुलज़ार,
ओ मीठी दादी गुलज़ार**

बन कर रथ शिवबाबा का,
सारथी शिव को बनाया
प्रभु-प्रेम के प्यासों को,
परमपिता से तुमने मिलवाया
जब तक ये दुनिया रहेगी,
भुला न पायेंगे तेरा ये प्यार
ओ प्यारी दादी गुलज़ार

हमें बनाने बाप-समान,
खुद को तुमने कर दिया कुर्बान
प्रभु से मिलन मनाने का,
कर दिया तुमने राह आसान
धरती-गगन चारों दिशायें,
याद करेंगे तेरा ये उपकार
ओ प्यारी दादी गुलज़ार

आँखों से दूर चली गई पर
दिल से कभी न ओझल होंगे
मधुर स्मृतियों में साथ बिताये
आपके वो हर पल होंगे
दिव्य रूहानी वो नज़रें,
मिलता था जिनसे दिल को करार
ओ प्यारी दादी गुलज़ार

नम नैनों से हम सभी,
दे रहे हैं यही दुआयें
हो जन्म जहाँ कहीं भी,
सब पर यूँ ही प्यार लुटायें
कदम आपके पड़ें जहाँ भी,
आ जाये वहाँ बहार
ओ प्यारी दादी गुलज़ार

दयाभाव - अमीरी का मार्ग

■■■ ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी (हरियाणा)

अरब देश में सुबुक्तीन नाम का एक बादशाह राज्य करता था। युवा अवस्था में वह एक सिपाही था। उसे शिकार का बहुत शौक था। जब भी समय मिलता, वह शिकार के लिए निकल जाता। एक दिन शिकार की खोज में वह बहुत देर तक भटकता रहा किन्तु उसे कुछ हाथ न लगा। निराश हुआ वह लौट रहा था तो उसने देखा कि एक हिरनी अपने छोटे-से बच्चे को प्यार-दुलार कर रही है।

सुबुक्तीन को लगा कि खाली हाथ लौटने से तो अच्छा है कि कुछ ही हाथ लग जाए। वह घोड़े से उतर गया। हिरनी आहट सुनकर झट से झाड़ियों में छिप गई लेकिन इतना छोटा उसका बच्चा फुर्ती नहीं दिखा पाया। सुबुक्तीन ने हिरनी के उस बच्चे को बांध कर घोड़े पर रख लिया और चल पड़ा। ममता के कारण हिरनी घोड़े के पीछे-पीछे चलने लगी।

बहुत दूर जाने के बाद सुबुक्तीन ने पीछे मुड़कर देखा तो हिरनी उसके पीछे आ रही थी। उसे हिरनी पर दया आ गई और उसने बच्चे को छोड़ दिया। अपने बच्चे को पाकर हिरनी बहुत प्रसन्न हुई और जंगल में गायब हो गई।

उस रात सुबुक्तीन ने स्वप्न में देखा, एक देवदूत उसे कह रहा था कि आज तुमने एक असहाय पशु पर दया करके बड़ा नेक काम किया है इसलिए खुदा ने तेरा नाम बादशाहों की लिस्ट में लिख दिया है। तुम अवश्य एक दिन बादशाह बनोगे। उसका सपना सच होने में देर नहीं लगी और उन्नति करता हुआ जल्दी ही वह सिपाही से सेनापति, फिर सेनापति से बादशाह बन गया।

मनुष्य द्वारा किये गए अच्छे या बुरे कर्मों का उसे फल अवश्य मिलता है। यदि कोई अमीर तो है परन्तु उसमें दया-भाव नहीं तो वह कंगाल ही कहा जाएगा। जीव दया का भाव न केवल लौकिक जगत में मानसिक शान्ति देता है बल्कि पारलौकिक जगत में भी श्रेष्ठ स्थान दिलाता है। जो व्यक्ति दूसरों पर उपकार करता है वह अपना उपकार करता है। अच्छा कार्य करने का भाव ही

स्वयं में उचित पुरस्कार है। श्रेष्ठ कर्म का ज्ञान ही श्रेष्ठ तकदीर की लकीर खींचने की कलम है।

कोई भी श्रेष्ठ कार्य अपने आप जन्म नहीं लेता, उसे विचारों की कोख में संवारना पड़ता है। काँच के दर्पण में हम अपना चेहरा देख सकते हैं और अपने कर्म रूपी दर्पण में अपना भविष्य। शुभ कार्य के लिए सदा ही शुभ मुहूर्त होता है। जिस कार्य को कोई नहीं कर सकता, उसे कर दिखाना ही सबसे बड़ी कला है। जैसे एक छोटे-से दीपक की रोशनी बहुत दूर तक फैलती है, वैसे ही, की गई थोड़ी-सी भलाई भी दूर तक फैलती है।

दया की आवश्यकता तब होती है जब किसी की स्थिति दुखदाई, लाचार, निराश्रित, अंधकारमय एवं निराशाजनक होती है। आज समूचा विश्व इसी तरह की स्थिति में बेबस है। परिस्थितियाँ भारी हो चुकी हैं। रहीम जी कहते हैं,

दीन सबन को लखत है, दीनहि लखै न कोय।
जो रहीम दीनहि लखत, दीनबन्धु सम होय।।

भावार्थ है; गरीब, दुखी लोग सबकी ओर आशा से देखते रहते हैं परन्तु उनकी ओर कोई नहीं देखता। लेकिन, जो व्यक्ति दुखियों की ओर देखता है वह दीनबन्धु भगवान की तरह पूज्य होता है। सब पर दया भाव रखने वाला उदार व्यक्ति हमेशा सबका भला ही चाहता है। वह कभी किसी के प्रति अनुदार नहीं होता। झूठ-कपट, धोखा-बईमानी जैसे अवगुण उससे हमेशा दूर ही भागते हैं। दया भाव आने पर कठोरता, करुणा में बदल जाती है और जटिलता, सरलता में। इससे मनुष्य के अन्दर जो शान्ति उतरती है वही उसका सौन्दर्य बन जाती है। उसकी गम्भीरता बाहर ही नहीं झलकती अपितु भीतर भी लबालब भरी रहती है। दया भाव उसका स्वभाव बन जाता है।

दयावान वही हो सकता है जिसकी ज्ञान की ज्योति जग चुकी है और जिसे भले-बुरे का, झूठ व सच का सही

मायने में अर्थ समझ में आ गया है। दयावान व्यक्ति महादानी तो होगा ही, वह वरदानी भी होगा। उसके द्वारा कहे गए वचन अनमोल होंगे जो अन्य आत्माओं को पवित्रता, सत्यता, ईमानदारी, वफादारी की राह दिखायेंगे।

शिवभगवानुवाच, दयाभाव व्यक्ति में तभी आयेगा जब वह योगयुक्त होगा। योगयुक्त होने से आनन्द, शान्ति, शक्ति और पवित्रता का खजाना प्राप्त होता है। जो माया के अधीन हैं, विकारी हैं, परेशान हैं उन पर दया करते हुए वह विचार करेगा कि क्यों न इन्हें भी ऐसी खुशी, ऐसी शान्ति, ऐसा आनन्द तथा प्रभु-प्रेम मिले जिससे ये अपने विकारी संस्कारों को बदल सच्चे अर्थों में धन्य हो जायें। ■■■

आन्तरिक शक्तियों का संचय

पृष्ठ 19 का शेष भाग...

एवं चरित्र का हास होना, ये सब आन्तरिक ऊर्जा के अपव्यय से उत्पन्न कारक हैं।

विशेष सहायक है राजयोग का अभ्यास

आपसी कुंठा, हताशा, तनाव, उन्माद आदि से स्वयं और पूरी मानवता की रक्षा के लिए हमें आन्तरिक ऊर्जा को बचाने का, संचित करने का उपाय अपना ही होगा अन्यथा स्वयं के साथ परिवार, समाज, देश और विश्व के दयनीय और दुःखद भविष्य को झेलकर, पीड़ादायक अन्त होने से हमें कोई बचा नहीं पायेगा। इसके लिए राजयोग का अभ्यास विशेष सहायक सिद्ध होता है। राजयोग में हम आत्म-चेतना में स्थित हो, शरीर से न्यारे हो जाते हैं। शरीर और इन्द्रियों से न्यारी आत्म-चेतना, ऊर्जा के अखण्ड स्रोत परमपिता परमात्मा से जुड़ जाती है। इस जुड़ाव से उसमें सर्व शक्तियों का भरण हो जाता है। दूसरे शब्दों में, आत्मा रूपी बैटरी की परमात्मा रूपी चार्जर से चारजिंग हो जाती है। प्रतिदिन कुछ पलों के एकान्तवास में इस प्रकार की गहन चारजिंग से आत्मबल, मनोबल और ईश्वरीय बल के हम धनी बन जाते हैं। ऐसे बल जहाँ हों, वहाँ कोई भी समस्या टिक नहीं पाती है। ■■■

नफरत

पृष्ठ 18 का शेष भाग...

बड़ाई है। जिस व्यक्ति से हम नफरत करते हैं उसे आंशिक रूप से घाटा होता है लेकिन हमें बहुत ज्यादा घाटा होता है। अतः शरीर को ठीक रखने के लिए नफरत को छोड़ना अति आवश्यक है। नफरत करना हम आसान समझते हैं लेकिन जीवन आबाद के बदले बर्बाद हो जाता है। शिवबाबा द्वारा बताये गये ज्ञान मार्ग पर चल कर हम अवश्य इस पर विजय पायेंगे। नफरत सूक्ष्म है लेकिन आत्मा और शरीर दोनों को प्रभावित करती है। नफरत को साथी बनाकर जीना कोई जीना नहीं होता। योग की सिद्धि में नफरत बाधा डालती है। अतः राजयोग द्वारा प्राप्त नम्रता का कवच हमेशा धारण करके रहें।

यह समझें कि हम सर्वशक्तिमान के बच्चे मास्टर सर्वशक्तिमान हैं। नफरत आयी और हमसे टकराकर भाग गई। हम पवित्र आत्मा के पास अपवित्र नफरत का स्थान है ही नहीं। यह हमारी परीक्षा लेने आयी थी। इसके प्रभाव में नहीं आना ही परीक्षा में पास होना हुआ। ■■■

अब नहीं तो कब नहीं

पृष्ठ 25 का शेष भाग...

आप प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में जरूर पधारें। वहाँ की निमित्त बहनों से आप भगवान से बातचीत करने की विधि राजयोग भी जरूर सीखें। वहाँ जाने से सफेद कपड़े पहनने पड़ेंगे, घर-बार छोड़कर संन्यासी बनना पड़ेगा, ऐसी गलतफहमी को त्याग दें। फल को दूर से देखने मात्र से ही उसका स्वाद थोड़े ही पता चल जाएगा।

में पिछले सोलह सालों से इस विद्यालय से जुड़कर गृहस्थ जीवन में रहते हुए सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम और खुशी का अनुभव कर रही हूँ। समय बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। ईश्वरीय कार्य के वर्तमान अमूल्य संगमयुग में आप ईश्वरीय पढ़ाई का फायदा अवश्य उठाएँ। 'अब नहीं तो कब नहीं' ■■■



शुभाशीष

परमकल्याणकारी परमपिता शिव की दिव्य वाणी को तथा आदिदेव प्रजापिता ब्रह्मा की नई सृष्टि रचना की श्रेष्ठ मत को लेख-कविताओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने वाली 'ज्ञानामृत' पत्रिका जन-सेवा के

56 वर्ष पूरे कर चुकी है।

आध्यात्मिक और मानवीय मूल्यों के हास के कारण आज चारों तरफ घनघोर अंधेरा छाया है। ऐसे में बुराइयों के अंधकार को चीरते हुए ज्ञान-दीप की तरह यह ज्ञानामृत पत्रिका सबके दिलों में श्रेष्ठ विचारधाराओं का उजाला फैला रही है। मानव मात्र को कर्तव्यों के प्रति सजग कर, विकारों और विकृतियों पर विजयी बनने का बल प्रदान कर रही है।

ज्ञानामृत के लेखों में गम्भीर सामाजिक विश्लेषण के साथ-साथ रमणीकता का सुन्दर सन्तुलन है। साहित्यिक रस से ओत-प्रोत इस ज्ञान-प्याले को पाठक एक ही श्वास में पी जाता है और पुनः-पुनः पीने के लिए सहेज कर रखता है। समय के कठोर आघातों के बीच ज्ञानामृत रूहानी लोरी-सी प्रतीत होती है। यह अनिद्रा के रोगी को सुलाती है परन्तु अकर्मण्य और आलसी को झकझोर कर जगाती है और कर्तव्यबद्ध कर देती है।

हर वर्ग और हर व्यवसाय के पाठकों को उमंग-उत्साह के पंख लगाने वाली, उन्हें सद्विवेक रूपी तीसरा नेत्र प्रदान करने वाली, सात्विक मन-बहलाव द्वारा आनन्दित करने वाली इस पत्रिका को सभी राजयोगी भाई-बहनें; हर गाँव, शहर, गली, मोहल्ले तक पहुँचाने की सेवा अथक होकर करते रहते हैं और आगे भी करते रहेंगे, ऐसी मेरी शुभकामना है। जो भाई-बहनें उत्कृष्ट विचारों से सजे लेख लिखते हैं, जो इसे आकर्षक रूप प्रदान करते हैं, जो इसे जन-जन तक पहुँचाकर जनप्रिय बनाते हैं, जो इसका अध्ययन कर स्वयं का और दूसरों का ज्ञान-खजाना बढ़ाते हैं, उन सबको मैं कोटि-कोटि बधाई देती हूँ।

वर्ष 2021-2022 के लिए स्नेही पाठकगण के प्रति यही शुभकामना है कि अन्तर्मुखी बन निरन्तर सम्पूर्णता रूपी लक्ष्य पर एकाग्र रहें, आत्मावलोकन करते हुए स्व को निखारते रहें तथा एकान्तवासी होकर साधनारत रहते हुए भी एकता के सूत्र में पिरोए रहें।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ
बी.के.रत्नमोहिनी

सदस्यता शुल्क:

(भारत) वार्षिक: 100 /- आजीवन : 2,000 /-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription:

Bank : State Bank of India, A/c Holder Name : Gyanamrit, A/c No : 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code : SBIN0010638

☺ अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र : ☺

Mobile: 09414006904, 09414423949, Email: hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंगप्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।

मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन, सह-सम्पादक - ब्र.कु. सन्तोष, शान्तिवन

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :

E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in



जगतगुरु शंकराचार्य जी के साथ



जगतगुरु शंकराचार्य जी के साथ



अशोक सिंघल जी एवं स्वामी ब्रह्मदेव जी के साथ



अभिनेता अमिताभ बच्चन जी के साथ



अभिनेता चिरंजिव के साथ



उत्तिसंगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह जी के साथ



सुनीता विलियम्स के साथ



वीरेंद्र सहवाग एवं उनकी मर्भपत्नि के साथ



अभिनेत्री रवीना टंडन के साथ



पूर्व गृहमंत्री भाता शिवराज पाटिल जी के साथ



यू.एन.आई.सी. की निर्देशिका बहन किरण मेहरा के साथ



मोटिवेशरल स्मीकर भाता शिव खेडा के साथ

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2021-2023 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2021-2023. Published on 20th of each Month & Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : April, 2021.



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी के
अव्यक्त आरोहण के दृश्य

If undelivered, please return to Gyanamrit Bhawan, Shantivan, Abu Road, Sirohi-307510